■ उत्तर प्रदेश शासन द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

सच का साथी...

# बी पी एस न्यूज

www.bpsnews.in

(वर्ष-10 अंक-21

पृष्ठ 8 मूल्य 2/रुपया

सोमवार 23 जून 2025

न्यायालय के आदेशों को दरकिनार कर केडीए ने की कार्रवाई 8

अखिलेश ने कसा तंज, बीजेपी के लोग गाय का दूध नहीं पीते, उन्हें गोबर पसंद 6

## भारत में बलात्कार और हिंसा का हवाला देकर अमेरिका ने जारी की ट्रैवल एडवाइजरी, विवाद शुरू

नई दिल्ली। अमेरिका ने भारत के लिए लेवल 2 की ट्रैवल एडवाइजरी जारी की है, जिससे विवाद छिड़ गया है। अमेरिकी विदेश विभाग ने भारत में रह रहे अपने नागरिकों, विशेषकर महिलाओं को, पर्यटन स्थलों और सार्वजनिक स्थानों पर अधिक सावधानी बरतने की सलाह दी है। इस फैसले के पीछे भारत में बलात्कार, हिंसा और आतंकवाद की बढ़ती घटनाओं का हवाला दिया गया है।अमेरिकी विदेश विभाग ने भारत में रहने वाले अमेरिकी नागरिकों और कामगारों के लिए लेवल 2 की ट्रैवल एडवाइजरी जारी कर एक बार फिर बहस छेड़ दी है। इस चौंकाने वाले फैसले में, अमेरिका ने अपने नागरिकों, विशेषकर महिलाओं को, भारत में किसी भी पर्यटन स्थल या अन्य सार्वजनिक स्थानों पर अधिक सावधानी बरतने की सलाह दी है। विदेश विभाग ने अपनी एडवाइजरी में भारत में बलात्कार, हिंसा और आतंकवाद की घटनाओं में वृद्धि का हवाला दिया है।अमेरिकी विदेश विभाग ने 16 जून को अपनी ट्रैवल एडवाइजरी को अपडेट करते हुए भारत में अपने नागरिकों को अधिक सावधानी बरतने की सलाह दी है। इस एडवाइजरी में अपराध और आतंकवाद को मुख्य कारण बताया गया है, जहाँ कुछ क्षेत्रों में जोखिम को अधिक बताया गया है।

एडवाइजरी के अनुसार, भारत में हिंसक अपराध और आतंकवाद होते हैं। इसमें विशेष रूप से कहा गया है कि बलात्कार भारत में सबसे तेजी से बढ़ते अपराधों में से एक है। यौन उत्पीड़न सहित हिंसक अपराध पर्यटक स्थलों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भी होते हैं।

आतंकवाद के खतरे पर प्रकाश डालते हुए, अमेरिका ने अपने नागरिकों से पर्यटक स्थलों, परिवहन केंद्रों, बाजारों/शॉपिंग मॉल और सरकारी सुविधाओं से बचने का आग्रह किया है, क्योंकि ये आतंकवादी हमलों के लिए संवेदनशील माने जाते हैं।जम्मू-कश्मीर के केंद्र शासित प्रदेश के लिए विशेष चेतावनी जारी की गई है,

जहाँ आतंकवाद और नागरिक अशांति के कारण यात्रा न करने की सलाह दी गई है (पूर्वी लद्दाख क्षेत्र और लेह को छोड़कर)। विदेश विभाग ने कहा, इस क्षेत्र में आतंकवादी हमले और हिंसक नागरिक अशांति संभव है। हिंसा छिटपुट रूप से होती है और भारत-पाकिस्तान के बीच नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर आम है। कश्मीर घाटी के पर्यटन स्थलों जैसे श्रीनगर, गुलमर्ग और पहलगाम में भी हिंसा होती है। एडवाइजरी में यह भी बताया गया कि भारत सरकार एलओसी के कुछ क्षेत्रों में विदेशी पर्यटकों को जाने की अनुमति नहीं देती है।इसके अतिरिक्त, अमेरिकी नागरिकों को भारत और पाकिस्तान के बीच संभावित सशस्त्र संघर्ष के प्रति भी आगाह किया गया है, और उन्हें अंतर्राष्ट्रीय सीमा के पास के क्षेत्रों में यात्रा न करने की सलाह दी गई है।

एडवाइजरी में महिलाओं को अत्यधिक सावधानी बरतने की विशेष सलाह दी गई है, साथ ही यह भी बताया गया है कि अमेरिकी सरकार की ग्रामीण क्षेत्रों में अपने नागरिकों को आपातकालीन सेवाएं प्रदान करने की क्षमता सीमित है।

विदेश विभाग ने भारत में मौजूद नक्सल खतरे पर भी विस्तार से बात की है। एडवाइजरी में कहा गया है कि माओवादी चरमपंथी समूह, जिन्हें नक्सली भी कहा जाता है, भारत के एक बड़े क्षेत्र में सक्रिय हैं। यह क्षेत्र पूर्वी महाराष्ट्र और उत्तरी तेलंगाना से लेकर पश्चिमी पश्चिम बंगाल तक फैला हुआ है। इसमें बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, मेघालय और ओडिशा को भी नक्सलवाद से प्रभावित राज्यों की सूची में शामिल किया गया है।

## हथियार डाल दो, नहीं तो बारिश में भी सोने नहीं देंगे, छत्तीसगढ़ में गृह मंत्री शाह की नक्सलियों को चेतावनी

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि आज छत्तीसगढ़ की आपराधिक न्याय प्रणाली के लिए बहुत महत्वपूर्ण दिन है, क्योंकि आज इसे आधुनिक बनाने के लिए 3 नई पहल की जा रही हैं। एक- आज नवा रायपुर में राष्ट्रीय फोरेंसिक विज्ञान विश्वविद्यालय के परिसर की आधारशिला रखी गई। दो- आज नवा रायपुर में केंद्रीय फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला की भी नींव रखी गई। तीन, जब तक ह्स्नस विश्वविद्यालय का नया भवन तैयार नहीं हो जाता, तब तक इसके स्थायी परिसर की भी आज शुरुआत हो गई है। अमित शाह ने कहा कि ये तीनों पहल न केवल छत्तीसगढ़ बल्कि आने वाले दिनों में पूरे मध्य भारत के लिए आपराधिक न्याय प्रणाली को एक आधार प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आज छत्तीसगढ़-आईहब का भी उद्घाटन किया गया है।विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ में सरकार बनने के बाद निवेश शिखर सम्मेलन हुआ, जिसमें 5 लाख करोड़ रुपये के एमओयू पर हस्ताक्षर हुए। छत्तीसगढ़ में कई उद्योग आ रहे हैं। मैं यहां छत्तीसगढ़ के युवाओं को स्पष्ट कहने आया हूं। जब तक युवा स्वयं उद्योगपति नहीं बनेंगे, तब तक छत्तीसगढ़ का निवेश औद्योगिक क्रांति का कारण नहीं बन सकता।गृह मंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ में विष्णु देव साय की सरकार और राज्य के गृह मंत्री विजय शर्मा की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि उन्होंने रुके हुए नक्सल ऑपरेशन को तेज़ गति से शुरू किया। मैंने देखा है कि सरकार बनने के बाद से इस सरकार ने न सिर्फ़ नक्सल विरोधी अभियान को तेज़ किया है बल्कि समय-समय पर इसका मार्गदर्शन भी किया है। पुलिस और सुरक्षा बलों का हौसला बढ़ाया है और इस लड़ाई को कुशलतापूर्वक आगे बढ़ाया है... मैंने कहा था कि 31 मार्च 2026 को यह देश नक्सलवाद से मुक्त हो जाएगा और मैं आज फिर दोहराना चाहूंगा कि जिस तरह से सुरक्षा बलों ने वीरता दिखाई है, हम इस लक्ष्य को ज़रूर हासिल करेंगे।शाह ने नक्सलियों से हिंसा छोड़ने और मुख्यधारा में शामिल होने का अनुरोध करते हुए कहा कि बातचीत की कोई जरूरत नहीं है, बस हथियार छोड़ दें, विकास की यात्रा में शामिल हों और आकर्षक आत्मसमर्पण नीति का लाभ उठाएं। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा, 卐हर बार बारिश के मौसम में नक्सली थोड़ा आराम करते थे (क्योंकि घने जंगल के अंदर उफनती नदियां और नाले नक्सल विरोधी अभियानों में बाधा डालते हैं), लेकिन इस बार, हम उन्हें मानसून के दौरान सोने नहीं देंगे और हम 31 मार्च के लक्ष्य को हासिल करने के लिए और आगे बढ़ेंगे। उन्होंने कहा कि वह नक्सलवाद की राह पर चले गए भटके युवाओं से हथियार छोड़ने की अपील करना चाहते हैं।

अमित शाह ने कहा कि यह अटल बिहारी वाजपेयी का शताब्दी वर्ष है। मैं पिछले 11 वर्षों से छत्तीसगढ़ आ रहा हूं। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि छत्तीसगढ़ के निर्माण का पूरा श्रेय हमारे नेता अटल बिहारी वाजपेयी को जाता है।

## गुरुग्राम में दिल्ली-जयपुर राजमार्ग पर बस पलटने से पुलिसकर्मी की मौत, 20 लोग घायल

नई दिल्ली। गुरुग्राम में दिल्ली-जयपुर राजमार्ग पर शनिवार सुबह बस पलटने से दिल्ली पुलिस के एक हेड कांस्टेबल की मौत हो गई और 20 से अधिक यात्री घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी।

अधिकारियों ने बताया कि दिल्ली से यात्रियों को लेकर आ रही राजस्थान परिवहन निगम की बस दिल्ली-जयपुर राजमार्ग पर पचगांव चौक के पास अनियंत्रित होकर पलट गई।पुलिस के मुताबिक, दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल बस के कंडक्टर और एक बच्चे को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बाकी घायलों को अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। हादसे में जान गंवाने वाले पुलिसकर्मी अशोक कुमार (39) अलवर जिले के मोलावास गांव के मूल निवासी थे।

## पुनौराधाम में होगा मां जानकी के भव्य मंदिर का निर्माण, नीतीश कुमार ने किया ऐलान

बिहार। राज्य सरकार द्वारा जारी योजना के अनुसार, जानकी मंदिर का निर्माण पारंपरिक भारतीय मंदिर वास्तुकला की शैली में किया जाएगा। इस परियोजना में तीर्थयात्रियों और आगंतुकों के लिए कई आधुनिक सुविधाएँ भी शामिल हैं- आरामदायक विश्राम स्थल, एक धर्मशाला, एक संग्रहालय, पार्किंग क्षेत्र, एक प्रार्थना कक्ष और एक सांस्कृतिक मंच।बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने रविवार को एक लंबे समय से प्रतीक्षित कदम उठाते हुए पुष्टि की कि सीतामढ़ी में पुनौराधाम के व्यापक विकास के लिए मास्टर प्लान को अंतिम रूप दे दिया गया है। माना जाता है कि सीतामढ़ी देवी सीता की जन्मस्थली है। यह घोषणा राज्य के लिए एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक मील का पत्थर है और आगामी विधानसभा चुनावों से पहले की गई है। प्रस्तावित डिज़ाइन की तस्वीरें एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर साझा करते हुए, मुख्यमंत्री ने कहा, 卐मुझे यह घोषणा करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि सीतामढ़ी के पुनौराधाम में जगत जननी माता जानकी को समर्पित एक भव्य मंदिर के लिए वास्तुशिल्प डिज़ाइन अब तैयार है। निर्माण प्रक्रिया में तेज़ी लाने के लिए एक समर्पित ट्रस्ट भी स्थापित किया गया है। मंदिर का निर्माण पूरे बिहार के लिए गर्व और सौभाग्य की बात होगी।卐

राज्य सरकार द्वारा जारी योजना के अनुसार, जानकी मंदिर का निर्माण पारंपरिक भारतीय मंदिर वास्तुकला की शैली में किया जाएगा। इस परियोजना में तीर्थयात्रियों और आगंतुकों के लिए कई आधुनिक सुविधाएँ भी शामिल हैं- आरामदायक विश्राम स्थल, एक धर्मशाला, एक संग्रहालय, पार्किंग क्षेत्र, एक प्रार्थना कक्ष और एक सांस्कृतिक मंच। भव्य प्रवेश द्वार से लेकर गर्भगृह तक की वास्तुकला को भक्तों के आध्यात्मिक अनुभव को गहरा करने के लिए सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है।बजट और निविदा प्रक्रिया की घोषणा जल्द ही की जाएगी। पुनौराधाम हिंदू परंपरा में मिथिला की बेटी और भगवान राम की पत्नी सीता की जन्मस्थली के रूप में पवित्र महत्व रखता है। बिहार सरकार अब इस पूजनीय स्थल को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने की योजना बना रही है। इस पहल को राज्य की सांस्कृतिक विरासत को मजबूत करने और चुनावों से पहले लोगों की भावनात्मक भावनाओं से जुड़ने के लिए एक रणनीतिक कदम के रूप में भी देखा जा रहा है।सीतामढ़ी के स्थानीय लोगों, खासकर पुनौराधाम क्षेत्र के लोगों में उत्साह साफ देखा जा सकता है, जो लंबे समय से एक भव्य मंदिर की मांग कर रहे हैं।

## सख्त फैसला, जम्मू कश्मीर में पूरा मार्ग नो फ्लाई जोन घोषित

अमरनाथ यात्रा की शुरुआत जल्द होने वाली है। इस यात्रा को लेकर श्रद्धालुओं की सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जा रहा है। इसे देखते हुए प्रशासन ने यात्रा के पूरे रूट को नो फ्लाइ जोन घोषित कर दिया है। सुरक्षा एजेंसियों और राज्य प्रशासन की मिलकर ली गई सिफारिश पर ये फैसला हुआ है। इससे यात्रा को शांतिपूर्ण और सुरक्षित तरीके से संपन्न किया जाएगा।

अमरनाथ गुफा क्षेत्र और उसके आस पास के इलाके को सरकार ने नो फ्लाई जोन बना दिया है। यानी अब यहां कुछ भी नहीं उड़ सकेगा। यहां ड्रोन उड़ानें पर भी पाबंदी है। वहीं अमरनाथ यात्रा के दो प्रमुख रूट बालटाल और पहलगाम है। इन दोनों ही मार्गों पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी की गई है। इसके तहत दोनों ही मार्गों पर नो फ्लाई जोन बनाया गया है।बता दें कि अमरनाथ यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा को लेकर इस मार्ग पर कई हवाई गतिविधियों को रोक दिया गया है। इसे नो फ्लाई जोन बनाया गया है। यानी इस जगह पर किसी प्रकार की हवाई सेवाओं का संचालन नहीं होगा। इसमें ड्रोन, पैराग्लाइडर या अनधिकृत हेलीकॉप्टर उड़ानों के संचालन की अनुमति नहीं मिलेगी।

वहीं इन जगहों पर अर्धसैनिक बलों और सुरक्षा एजेंसियों की तैनाती की गई है। इस यात्रा को पूरी तरह से सुरक्षित और व्यवस्थि तरीके से संपन्न किया जा सके इसके इंतजाम भी है। सरकार की मानें तो ये फैसला श्रद्धालुओं की सुरक्षा को देखते हुए लिया गया है। श्रद्धालु बिना डर के श्रद्धा और शांति के साथ बाबा अमरनाथ के दर्शन करने पहुंचे। बता दें कि ये कदम सरकार व सुरक्षा एजेंसियां ने ऐसे समय में उठाया है जब एजेंसियां संभावित खतरे को लेकर सतर्क है। पहलगाम हमले के बाद अमरनाथ यात्रा को सुरक्षित बनाने के लिए सरकार पूरे इंजताम कर रही है।

## देह व्यापार कराने के आरोप में महिला गिरफ्तार

मुंबई पुलिस ने एक बड़े देह व्यापार गिरोह का पर्दाफाश किया है। मुंबई में काफी समय से देह व्यापार से जुड़ी कई वारदातें सामने आ रही है। अब पुलिस एकशन में आ गयी है और देह व्यापार गिरोह की जड़े काटने पर उतारू हो गयी है। पुलिस ने मिली सूचना के बाद एक प्लानिंग के तहत एक महिला को गिरफ्तार किया है।

मुंबई पुलिस ने पश्चिमी उपनगर में स्थित एक रेस्टोरेंट पर छापेमारी कर एक महिला को देह व्यापार गिरोह संचालित करने के आरोप में गिरफ्तार किया है। इस कार्रवाई में एक नाबालिग लड़की समेत तीन महिलाओं को बचाया गया है। एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

अधिकारी के अनुसार, अपराध शाखा को गुप्त सूचना मिली थी, जिसके आधार पर बृहस्पतिवार देर रात मलाड (पश्चिम) के चिंचोली बुंदर रोड पर स्थित एक रेस्टोरेंट पर छापा मारा गया। उन्होंने बताया कि पुलिस ने जाल बिछाकर एक फर्जी ग्राहक की मदद से आरोपी महिला को रंगे हाथों पकड़ा और मौके से एक नाबालिग लड़की और दो महिलाओं को बचाया। पुलिस ने आरोपी महिला के खिलाफ अनैतिक व्यापार (निवारण) अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है और आगे की जांच जारी है।

## पहलगाम आतंकी हमला: एनआईए के हाथ लगी बड़ी सफलता, आतंकियों को पनाह देने के मामले में दो लोग गिरफ्तार

नई दिल्ली। पहलगाम आतंकी हमले के मामले में एक बड़ी सफलता हासिल करते हुए, राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने दक्षिण कश्मीर के एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल पहलगाम में हुए भीषण हमले को अंजाम देने वाले आतंकवादियों को पनाह देने के आरोप में दो लोगों को गिरफ्तार किया है। इस हमले में 26 लोग मारे गए थे, जिनमें से अधिकतर पर्यटक थे और 16 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए थे। आरोपियों की पहचान पहलगाम के बटकोट निवासी परवेज अहमद जोथर और पहलगाम के हिल पार्क निवासी बशीर अहमद जोथर के रूप में हुई है।

गिरफ्तार व्यक्तियों ने हमले में शामिल तीन सशस्त्र आतंकवादियों की पहचान का खुलासा किया है, और यह भी पुष्टि की है कि वे प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) से जुड़े पाकिस्तानी नागरिक थे। एनआईए की जांच के अनुसार, परवेज और बशीर ने जानबूझकर हमले से पहले हिल पार्क में एक मौसमी ढोक (झोपड़ी) में तीन सशस्त्र आतंकवादियों को शरण दी थी। दोनों लोगों ने आतंकवादियों को भोजन, आश्रय और रसद सहायता प्रदान की थी, जिन्होंने उस दुर्भाग्यपूर्ण दोपहर को, धार्मिक पहचान के आधार पर पर्यटकों को चुन-चुन कर मार डाला, जिससे यह अब तक का सबसे भीषण आतंकवादी हमला बन गया।

रवेज अहमद जोथर और पहलगाम के हिल पार्क निवासी बशीर अहमद जोथर - ने हमले में शामिल तीन सशस्त्र आतंकवादियों की पहचान का खुलासा किया है, और यह भी पुष्टि की है कि वे प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) से जुड़े पाकिस्तानी नागरिक थे। एनआईए, जिसने गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम, 1967 की धारा 19 के तहत दोनों को गिरफ्तार किया है, 22 अप्रैल 2025 को दुनिया को हिला देने वाले हमले के बाद दर्ज किए गए आरसी-02/2025/एनआईए/जेएमयू मामले की आगे की जांच कर रही है। मामले में आगे की जांच जारी है।

एनआईए ने दोनों को गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम, 1967 की धारा 19 के तहत गिरफ्तार किया है। वह 22 अप्रैल 2025 को दुनिया को हिला देने वाले हमले के बाद दर्ज मामले की आगे की जांच कर रही है। मामले में आगे की जांच जारी है। इस साल 22 अप्रैल को पहलगाम की बैसरन घाटी में पर्यटकों पर आतंकवादियों द्वारा की गई गोलीबारी में कम से कम 26 निर्दोष नागरिक मारे गए थे। हमले के बाद मामले की जांच एनआईए ने अपने हाथ में ले ली थी। जांच के दौरान संघीय एजेंसी को कई सफलताएं मिलीं; हालांकि, यह सबसे बड़ी सफलताओं में से एक है क्योंकि एजेंसी हमले के पीछे आतंकवादियों की पहचान स्थापित करने में सक्षम रही है।

## संपादकीय

### सुखद योग संयोग

आज पूरा देश व दुनिया ग्यारहवां विश्व योग दिवस उल्लास के साथ मना रही है। लाखों लोगों का बड़े आयोजनों के साथ उत्साह व उल्लास से जुड़ना, इस बात का प्रमाण है कि देश ने अपनी सदियों पुरानी योग की विरासत का अंगीकार कर लिया है। सुखद संयोग देखिए कि जल-थल और नभ में योग करते चित्र मीडिया में तैर रहे हैं। केंद्र व राज्य सरकारों के मंत्री से लेकर संत्री तक योग करते नजर आ रहे हैं। सेना के तीनों अंगों व अर्द्ध सैनिक बलों की अनुशासित टुकड़ियां जब योग करती नजर आती हैं तो योगमय आभा निखर आती है। राष्ट्रीय राजधानी व राज्यों की राजधानियों में विशेष योग समारोह आयोजित हो रहे हैं। हरियाणा सरकार ने तो पिछले एक महीने से कुरुक्षेत्र में आयोजित होने वाले मुख्य योग समारोह के लिये पूरी ताकत लगा दी है। यूं तो सारे राज्य में योग चेतना अभियान, रैलियां,मैराथन के साथ स्कूल-कालेजों में योग प्रशिक्षण कार्यक्रम योग प्रोटोकॉल के तहत आयोजित किए जाते रहे हैं, लेकिन सरकार का खास ध्यान कुरुक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर में होने वाले कार्यक्रम पर केंद्रित है। जिसमें एक लाख लोगों के जुटने की तैयारी युद्ध स्तर पर की गई है। सरकार की कोशिश है कि ग्यारहवें विश्व योग दिवस पर राज्यभर में होने वाले योग समारोहों में ग्यारह लाख लोग भाग लें। कोशिश है नया विश्व रिकॉर्ड बने, जब ग्यारह लाख लोग राज्य के बाईस जनपदों और 121 खंडों के विभिन्न स्थानों पर एक साथ योगाभ्यास करेंगे। कमोबेश, ऐसा ही उत्साह देश के अन्य राज्यों में नजर आ रहा है और मुख्यमंत्री, मंत्रियों से लेकर तमाम बड़े अधिकारी योग दिवस समारोहों में शिरकत करते नजर आएंगे। निश्चित रूप से विश्व योग दिवस पर समारोहपूर्वक आयोजन योग के प्रति उत्साह जगाएंगे। लेकिन जरूरी है कि स्वस्थ जीवन शैली के लिये बाकी 364 दिन भी योग हमारी दिनचर्या का अटूट हिस्सा बने। निस्संदेह, स्वस्थ नागरिक किसी भी देश की अमूल्य पूंजी है। वहीं रोगग्रस्त नागरिक किसी राष्ट्र की बड़ी क्षति है।

ऐसे समय में जब हमारी जीवन शैली में आए आमूल-चूल बदलावों से मनोकायिक रोगों का उफान है, योग ही हमें स्वस्थ जीवन की गारंटी दे सकता है। योग गुरु कहते भी हैं कि यह समय दवा से नहीं, विचार से उपचार का है। दवाओं के साइड इफेक्ट सर्वविदित हैं। लगातार महंगी होती चिकित्सा प्रणाली रोग के तात्कालिक उपचार में तो सक्षम है लेकिन रह-रहकर रोग भी उभर आते हैं। जरूरी है कि हमारी योगमय जीवन शैली ऐसी हो कि रोगवर्धक तत्व हमारे शरीर को अपना घर न बना सकें, जो रोग फैलाने में मुख्य भूमिका निभाते हैं। योग हमारी सकारात्मक सोच व सात्विक जीवन शैली को वरीयता देता है। जिससे हमारा तन-मन शुद्ध हो सके। आज अमेरिका समेत तमाम पश्चिमी देशों के शोध बता रहे हैं कि हमारे प्रदूषित विचार पहले मन को बीमार करते हैं, फिर बीमार मन हमारे शरीर को रोगी बनाता है।

# संतुष्ट जीवन के लिए योग के संयोग

यदि हम किसी नवयुवक से आग्रहपूर्वक योग को अपनाने के लिए कहें तो वह हमसे पूछ सकता है, 'मेरे लिए योग इतना महत्वपूर्ण क्यों है?' निश्चित रूप से उसके प्रश्न का बुद्धिमत्तापूर्ण उत्तर देने के लिए स्वयं हमें इसका उत्तर ज्ञात होना चाहिए। निस्संदेह, पिछले एक दशक से प्रत्येक वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर भारत ने हमारे जीवन में योग के शाश्वत महत्व को उत्सव के रूप में मनाने में सम्पूर्ण विश्व का नेतृत्व किया है। फिर भी, जैसा कि हममें से कुछ लोग जानते हैं कि योग का सही अर्थ इसकी आंतरिक एवं गहन व्यक्तिगत अभिव्यक्ति में निहित है। योग और ध्यान की वैज्ञानिक पद्धतियों का नियमित अभ्यास हमें उस ईश्वर के साथ एकता की दिव्य खोज की ओर ले जाता है, जिस पर संसार के सभी धर्म बल देते हैं; यह खोज कालांतर में प्रेरित होती है और अंततः संभव भी होती है।

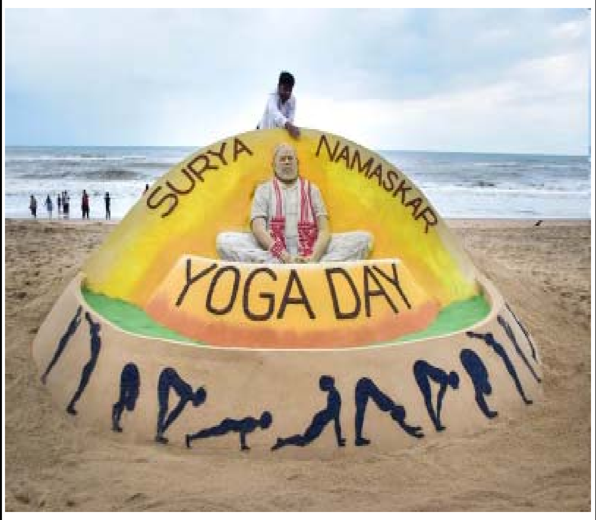


यदि हम किसी नवयुवक से आग्रहपूर्वक योग को अपनाने के लिए कहें तो वह हमसे पूछ सकता है, 'मेरे लिए योग इतना महत्वपूर्ण क्यों है?' निश्चित रूप से उसके प्रश्न का बुद्धिमत्तापूर्ण उत्तर देने के लिए स्वयं हमें इसका उत्तर ज्ञात होना चाहिए। निस्संदेह, पिछले एक दशक से प्रत्येक वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर भारत ने हमारे जीवन में योग के शाश्वत महत्व को उत्सव के रूप में मनाने में सम्पूर्ण विश्व का नेतृत्व किया है। फिर भी, जैसा कि हममें से कुछ लोग जानते हैं कि योग का सही अर्थ इसकी आंतरिक एवं गहन व्यक्तिगत अभिव्यक्ति में निहित है। योग और ध्यान की वैज्ञानिक पद्धतियों का नियमित अभ्यास हमें उस ईश्वर के साथ एकता की दिव्य खोज की ओर ले जाता है, जिस पर संसार के सभी धर्म बल देते हैं; यह खोज कालांतर में प्रेरित होती है और अंततः संभव भी होती है।

क्रियायोग आध्यात्मिक अभ्यास की पद्धति सच्चे योगी को अन्ततः जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अपने शिष्य अर्जुन को दिए गए उपदेश में दो बार क्रियायोग का उल्लेख किया है। दरअसल, अनेक सदियों की मानवीय अज्ञानता के पश्चात उन्नीसवीं शताब्दी में महान आध्यात्मिक गुरु लाहिड़ी महाशय ने अपने शाश्वत गुरु महावतार बाबाजी के आशीर्वाद से इस महत्वपूर्ण और शुद्ध विज्ञान की पुनः खोज की। तत्पश्चात लाहिड़ी महाशय के शिष्य स्वामी श्रीयुक्तेश्वर गिरिजी ने कालांतर में अपने शिष्य श्री श्री परमहंस योगानन्द को क्रियायोग का गहन ज्ञान प्रदान किया।

कालांतर में योगानन्द जी ने मानव कल्याण के लिये क्रियायोग के वैश्विक दूत होने का संकल्प किया और इसके लाभों का सम्पूर्ण पाश्चात्य जगत में प्राणपण से प्रचार किया। आज सम्पूर्ण विश्व में उनके लाखों अनुयायी योग-ध्यान की वैज्ञानिक प्रविधियों का अभ्यास निरंतर करते हैं, जो स्वाभाविक रूप से क्रियायोग मार्ग का ही विस्तार है।

योगानन्दजी ने अपनी विश्व प्रसिद्ध और तमाम वैश्विक भाषाओं में अनुवादित पुस्तक 'योगी कथामृत' में अत्यंत प्रेरक ढंग से इसका वर्णन किया है, 'माया या प्रकृति के नियम के अधीन जीने वाले मनुष्यों में प्राणशक्ति का प्रवाह हमेशा बाह्य जगत की ओर होता है और इन्द्रियों में प्राणशक्ति का व्यय हो जाता है। साथ ही गाहे-बगाहे उसका दुरुपयोग भी होता है। सुखद ही है कि क्रियायोग का अभ्यास इस प्रवाह को वापस मोड़ देता है; प्राणशक्ति को मन द्वारा अन्तर्जगत में ले जाया जाता है, जहां प्राणशक्ति मेरुदण्ड की सूक्ष्म शक्तियों के साथ पुनः एक हो जाती है। प्राणशक्ति को इस प्रकार पुनः बल मिलने से योगी के शरीर एवं मस्तिष्क की कोशिकाओं को एक आध्यात्मिक अमृत से नवशक्ति प्राप्त होती है।'

निश्चित रूप से क्रिया योग हमारे तन-मन के साथ ही आध्यात्मिक कल्याण करता है। योगी कथामृत पुस्तक से हम यह भी सीखते हैं कि क्रियायोग का नियमित अभ्यास सच्चे साधक को अपने रक्त को कार्बनरहित करने और उसे ऑक्सीजन से आपूरित करने में सक्षम बनाता है, जिसका संबंध हमारे शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य से है। इस प्रकार मस्तिष्क और मेरुदण्ड इस अतिरिक्त ऑक्सीजन से पुनर्जीवन प्राप्त करते हैं और ऊतकों का क्षय रुक जाता है। पूर्ण रूप से क्रियायोग के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभों का वर्णन करना सम्भव नहीं है। यह जीवन को समृद्ध बनाने वाली एक प्रविधि है जिसका निष्ठापूर्ण अभ्यास निश्चित रूप से योगी के अस्तित्व को उन्नत करता है।

निस्संदेह, क्रियायोग एक सार्वजनीन प्रविधि है और इसके अभ्यास द्वारा प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन की साधारण दिनचर्या से परे आध्यात्मिक ऊंचाइयों और गहराइयों तक पहुंच सकता है। सन ? 1917 में श्री श्री परमहंस योगानन्द द्वारा स्थापित संस्था, योगदा सत्संग सोसायटी ऑफ़ इण्डिया (वाईएसएस), भारत, नेपाल और श्रीलंका के साधकों में योगानन्दजी की विशुद्ध क्रियायोग शिक्षाओं का प्रसार करती है। वाईएसएस की सहयोगी संस्था सेल्फ़-रियलाइज़ेशन फ़ेलोशिप (एसआरएफ़) लॉस एंजेलिस स्थित अपने मुख्यालय (मदर सेंटर) के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व में इसी प्रकार की भूमिका निभाती है। योगानन्दजी ने ठीक सौ साल पहले सन ? 1925 में मानवता के कल्याण के लिए एसआरएफ की स्थापना की थी। इन वर्षों में लाखों साधक इन शिक्षाओं से लाभान्वित हुए हैं। उनके जीवन में अप्रत्याशित बदलाव आए हैं। साथ ही पश्चिमी जगत में योग को प्रतिष्ठा मिली है।

आपके और मेरे जैसे इस संसार के सामान्य लोगों के लिए, जीवन को संतुष्टि प्रदान करने वाला योग का प्रभाव केवल तभी अनुभव किया जा सकेगा जब हम परिश्रम और निष्ठापूर्वक क्रियायोग जैसी किसी वैज्ञानिक पद्धति का अभ्यास करेंगे। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि इस प्रकार हम सब के लिए अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का यही वास्तविक महत्व है!भारतीय प्रकाशन द्वारा उनकी अनुदित कविता अद्भुत है, 'हम सभी का वध करो, और हमारे खून को नदी बना दोज।'

# हवा में मौजूद डीएनए में जीवन के सुराग

नए शोध से पता चलता है कि हम जिस हवा में सांस लेते हैं, उसमें भी उस क्षेत्र में प्रजातियों का नक्शा बनाने, रोगजनकों को ट्रैक करने और मानव गतिविधि से उत्पन्न होने वाले रासायनिक संकेतों का पता लगाने के लिए पर्याप्त डीएनए होता है।यह बात कुछ चौंकाने वाली हो सकती है कि मनुष्य का डीएनए वातावरण में हर जगह मौजूद है। यूनिवर्सिटी ऑफ फ्लोरिडा (यूएफ) के रिसर्चरों द्वारा किए गए एक अध्ययन में दूरदराज के इलाकों, समुद्रों और नदियों से लेकर हवा तक लगभग हर जगह मानव डीएनए पाया गया है। हम इन सभी जगहों पर खांसते हैं, थूकते हैं या अपने डीएनए को फ्लश करते हैं। रिसर्चरों ने जांच के दौरान लगभग सभी तरह के वातावरण में उच्च क्वालिटी के मानव डीएनए की मौजूदगी देखी। यह आनुवंशिक सामग्री हमारे लिए बहुत उपयोगी हो सकती है।आयरलैंड की राजधानी डबलिन में किए गए एक अध्ययन में वैज्ञानिकों ने पौधों, जानवरों और सूक्ष्म जीवों की आनुवंशिक सामग्री को शहर के वातावरण में बहते हुए पाया। उन्होंने शहर की हवा में ??अवैध नशीली दवाओं के निशान भी खोजे। आसपास के वातावरण में मौजूद आनुवंशिक सामग्री को पर्यावरणीय डीएनए या एनवायरमेंटल डीएनए (ईडीएनए) कहा जाता है। हवा में मौजूद डीएनए में जीवन के सुराग छिपे हैं। नए शोध से पता चलता है कि हम जिस हवा में सांस लेते हैं, उसमें भी उस क्षेत्र में प्रजातियों का नक्शा बनाने, रोगजनकों को ट्रैक करने और मानव गतिविधि से उत्पन्न होने वाले रासायनिक संकेतों का पता लगाने के लिए पर्याप्त डीएनए होता है। इस अध्ययन के प्रोजेक्ट लीडर डेविड डफी की टीम ने यूएफ की विटनी लैबोरेटरी में लुप्तप्राय समुद्री कछुओं और वायरल कैंसर का अध्ययन करने के लिए पर्यावरणीय डीएनए का सफलतापूर्वक उपयोग किया है। उन्होंने रेत में कछुओं के ट्रैक्स से उपयोगी डीएनए निकाला है। वैज्ञानिकों को पता था कि मानव ईडीएनए उनके कछुओं के नमूनों

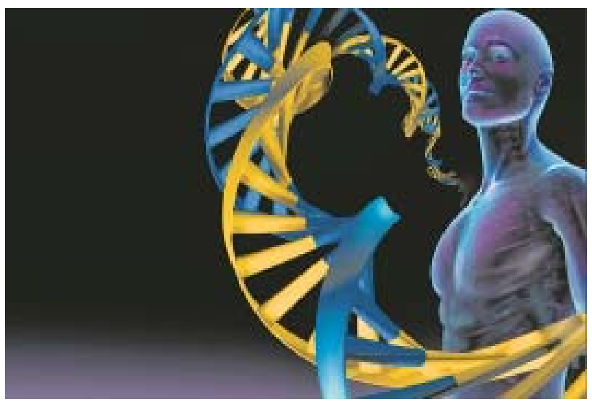

में मिल सकता है और शायद कई अन्य स्थानों पर भी यह डीएनए मिल सकता है जहां उन्होंने सर्वे किया था। आधुनिक आनुवंशिक सीक्वेंसिंग तकनीक से पर्यावरण के नमूने में प्रत्येक जीव के डीएनए को क्रमबद्ध करना अब आसान हो गया है। रिसर्चरों की टीम को विटनी लैब के आसपास समुद्र और नदियों में, शहर के आसपास और मानव बस्ती से दूर के स्थानों तथा अलग-थलग समुद्र तटों से रेत में अच्छी क्वालिटी वाले मानव डीएनए मिले।अमेरिका की नेशनल पार्क सर्विस की मदद से किए गए एक परीक्षण में रिसर्चरों ने एक दूरस्थ द्वीप के उस हिस्से की यात्रा की जहां लोग कभी नहीं गए थे। यह स्थान मानव डीएनए से मुक्त था। लेकिन वे इस क्षेत्र में स्वैच्छिक प्रतिभागियों के पैरों के निशान से डीएनए निकालने में सफल रहे। उन्होंने प्रतिभागियों की अनुमति से उनके जीनोम अथवा डीएनए समूह के कुछ हिस्सों को क्रमबद्ध भी किया। वैज्ञानिकों ने एक पशु चिकित्सालय से कमरे की हवा के नमूने भी एकत्र किए। इन नमूनों की मदद से वे कर्मचारियों, एक पशु रोगी और सामान्य पशु विषाणुओं से मेल खाने वाले डीएनए को अलग करने में सफल रहे। डफी ने कहा कि पर्यावरणीय डीएनए में उपलब्ध जानकारी के स्तर को देखते हुए हमने इस बात पर विचार शुरू कर दिया है कि मनुष्यों, वन्यजीवों और अन्य प्रजातियों में इसके संभावित अनुप्रयोग क्या हो सकते हैं। फ्लोरिडा विश्वविद्यालय की विटनी लैब ने हवा सहित लगभग हर वातावरण से डीएनए निकालने और उसका विश्लेषण करने के अपने तरीकों को व्यापक बनाया है। यह डीएनए सिर्फ सतह पर नहीं रहता। यह हवा में भी स्वतंत्र रूप से मौजूद रहता है।शोधकर्ताओं ने पाया कि घंटों या कई दिनों तक चलने वाले साधारण एयर फिल्टर बड़ी मात्रा में सूचनात्मक आनुवंशिक सामग्री एकत्र कर सकते हैं। डफी ने कहा, जब हमने शुरुआत की, तो ऐसा लगा कि हवा से डीएनए के बड़े टुकड़े प्राप्त करना मुश्किल होगा। लेकिन ऐसा नहीं है। हम वास्तव में बहुत सारे सूचनात्मक डीएनए प्राप्त रहे हैं। इसका मतलब है कि आप प्रजातियों को सीधे परेशान किए बगैर उनका अध्ययन कर सकते हैं।इस विधि से एक क्षेत्र में सभी प्रजातियों का एक साथ अध्ययन किया जा सकता है।

डफ़ी की प्रयोगशाला ने डबलिन में हवाई डीएनए संग्रह उपकरण स्थापित किए। उपकरण के फिल्टर ने शहर की हवा में तैर रहे सैकड़ों मानव रोगाणुओं के निशान एकत्र किए जिनमें वायरस और बैक्टीरिया शामिल हैं। इस तरह की निगरानी बीमारी के प्रकोप का जल्दी पता लगाने या आबादी के माध्यम से फैलने वाले संक्रमण को समझने में महत्वपूर्ण साबित हो सकती है। इस तरीके से मौजूदा तकनीकों की तुलना में पर्यावरणीय एलर्जी का भी अधिक सटीक रूप से पता लगा सकता है। एलर्जी का पता लगाने की क्षमता डॉक्टरों द्वारा रोगियों को सलाह देने के तरीके या सार्वजनिक स्वास्थ्य एजेंसियों द्वारा चेतावनी जारी करने के तरीके को बदल सकती है।

## विश्वास फिर से हासिल करने का सार्थक प्रयास

पहलगाम आतंकी हमले के डेढ़ महीने बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जम्मू-कश्मीर यात्रा स्थानीय लोगों के साथ एकजुटता की एक सार्थक पहल ही कही जाएगी। इसके साथ ही केंद्र शासित प्रदेश में बड़ी रेल परियोजनाओं के उद्घाटन से पाकिस्तान को सख्त संदेश देने की कोशिश की गई है कि जम्मू-कश्मीर की प्रगति को उसकी तमाम साजिशों के बावजूद धीमा नहीं पड़ने दिया जाएगा। इसके विपरीत पाक पोषित आतंकवादियों द्वारा शांति भंग करने के तमाम षड्यंत्रों के बावजूद विकास में तेजी लाने के भरसक प्रयास जारी रहेंगे। कश्मीरियों से संवाद कायम करते हुए प्रधानमंत्री ने पाकिस्तान पर पर्यटकों को निशाना बनाने और पर्यटन पर निर्भर लोगों को उनकी आजीविका से वंचित करने का आरोप लगाया। उन्होंने इसे सीधे-सीधे इंसानियत और कश्मीरियत पर हमला बताया। निस्संदेह, कश्मीर घाटी को भारत के बाकी रेल नेटवर्क से जोड़ने का सामरिक व प्रतीकात्मक महत्व किसी से छिपा नहीं है। यह सरकार के इस दृष्टिकोण की पुष्टि है कि जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न व अविभाज्य हिस्सा था, है और रहेगा। प्रधानमंत्री ने उधमपुर-श्रीनगर-बारामुल्ला रेलवे लिंक को जम्मू कश्मीर की नई पहचान और भारत की नई ताकत बताया है। इस प्रकार उन्होंने इस बात पर जोर दिया है कि पहलगाम के जघन्य हत्याकांड के बाद केंद्र शासित प्रदेश और देश, दोनों ही मजबूत हुए हैं। निश्चित रूप से प्रधानमंत्री की स्पष्ट अभिव्यक्ति न केवल स्थानीय लोगों बल्कि शेष देश से आने वाले पर्यटकों का विश्वास फिर से हासिल करने का सार्थक प्रयास है। इसी तरह के प्रयास राज्य के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला की तरफ से भी किए जा रहे हैं। राज्य के लोगों का मनोबल और पर्यटकों का भरोसा बढ़ाने के मकसद से मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने पिछले सप्ताह एक सराहनीय कदम उठाया। उन्होंने पहलगाम की सड़कों पर साइकिल चलाई और जोर देकर कहा कि अब आतंकवाद पर्यटन को नहीं रोक सकता है। वहीं केंद्र सरकार भी इस दिशा में रचनात्मक भूमिका निभा रही है और राज्य सरकार को हर संभव सहयोग दे रही है।

# व्यंग्य: सरकारी स्कूलों का मर्जीकरण क्या बनेगा निजी स्कूलों का मौजीकरण..!

**पंकज सीबी मिश्रा /राजनीतिक विशलेषक एवं पत्रकार जौनपुर यूपी**

दो साल पहले ही मैंने इस मर्जीकरण का आईडीया दिया था और बकायादा मेरा एक लेख प्राथमिक शिक्षा के ध्वस्तिकरण और अयोग्य मास्टरों के प्राथमिक शिक्षा में चयन नें अभिवाहकों का मोह भंग कर दिया था और ऊपर से कुकुरमुत्ते की तरह उग रहें सरकारी स्कूलों नें कम आफत नहीं बरसाईं ।एक किमी के दायरे में चार स्कूल तो क्या छात्र मिलेंगे ! कोई अभिवाहक अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में नहीं भेजना चाहता। सरकार को इसपर कड़े कदम उठाने होंगे और नियम अधिनियम बना कर यह स्पष्ट कर देना होगा कि सरकारी में पढ़ोगे तभी सरकारी जॉब वरना निजी स्कूलों से निजी जॉब ढूढो ! मिडिया में चल रही खबर के अनुसार योगी सरकार कक्षा 8 तक के 5000 से अधिक स्कूलों को मर्ज करने की तैयारी कर ली है। शासन का तर्क है कि इसका विलय करके हर जिले में एक मुख्यमंत्री मॉडल कंपोजिट स्कूल खोला जाएगा पर इससे घंटा फर्क नहीं पड़ने वाला क्यूंकि पढ़ाएंगे वही गुरूजी पान गुटखा वाले ही ना !जबकि आंकड़ों की माने तो 28 हजार से अधिक प्राथमिक स्कूलों को कंपोजिट में तब्दील करने का कोई फायदा नज़र नहीं मिला ऊपर से मिड डे मिल योजना विभाग नें जमकर वसूली की है स्कूलों से । कम बच्चों वाले सरकारी स्कूलों को नजदीकी स्कूलों में विलय का मैं पुर्ण समर्थन करता हूं क्योकि निजी स्कूल बहुत ज्यादा खुले है और सरकारी उससे भी ज्यादा तो अब इसके बाद एक नियम और लाइये की तीन किमी में एक ही निजी स्कूल और एक ही सरकारी स्कूल संचालित होगा। भारत दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है, जहां सरकारी स्कूलों में पढ़ना कोई नही चाहता लेकिन नौकरी सब चाहते है। 19-20 बच्चों के साथ 5-6 अध्यापक का लाखों रूपय तनख्वाह,शिक्षा व पैसे दोनों की बर्बादी है, अध्यापक पढ़ाना नही चाहता, बच्चों के माता-पिता सरकारी स्कुल में भेजते नहीं। सरकारी स्कूल से थोड़े न मोक्ष मिलता हैं मोक्ष तो निजी अंग्रेजी स्कूलों में मिलता हैं । शायद यहीं रामराज्य के शासन प्रणाली का मूलमंत्र हैं। यूपी सरकार ने 5,000 से अधिक स्कूलों को बंद करने की प्रक्रिया शुरू कर दी हैं। तर्क दिया जा रहा हैं कि ऐसे स्कूलों का विलय नजदीकी स्कूलों में किया जाएगा। हैं न गज्जब का स्कीम ? शिक्षा के निजीकरण के पूंजीवादी एजेंडे को बहुत है शातिराना अंदाज में आगे बढ़ाया जा रहा हैं। सोशल मिडिया पर प्रसारित आंकड़े बताते हैं कि यूपी में 2014-24 के बीच सरकारी स्कूलों की संख्या में 24.1त्न कमी आई, जबकि निजी स्कूल 14.9त्न बढ़े हैं। मतलब समझ रहें हैं न ? सरकार को तेजी से इस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए कि हर तीन किलोमीटर के दायरे में एक ही स्कूल हो, पर सरकार उलटी दिशा में चल रहीं हैं। यूपी सरकार का निजी स्कूलों पर पाबंदी ना लगाना सीधे सीधे शिक्षा के अधिकार अधिनियम का उल्लंघन हैं। शिक्षा का अधिकार अधिनियम (ञ्जश्व ) 2009 के तहत, 6-14 वर्ष के प्रत्येक बच्चे को अपने निवास स्थान से 1 किमी (प्राथमिक) और 3 किमी (उच्च प्राथमिक) के दायरे में स्कूल उपलब्ध होना चाहिए। यह गरीब, दलित और वंचित बच्चों की शिक्षा को सीधे तौर पर प्रभावित करेगा।

कोई भी व्यक्ति इस बात को समझ सकता हैं कि, गाँवों में बच्चे 3-4 किमी दूर स्कूल नहीं जा सकते, जिससे बच्चों के ड्रॉपआउट का दर बढ़ सकता हैं। और यह ड्रॉपआउट गरीब, वंचित, दलित, आदिवासी का सबसे ज्यादा होगा। कई गांवों में सड़कें खराब हैं, और नदी, नाले या हाईवे जैसी भौगोलिक बाधाएं परिवहन को और कठिन बनाती हैं।सोचिए, यदि एक गांव का सरकारी स्कूल बंद हो जाता है और नया निजी स्कूल 2 किमी दूर है, तो छोटे बच्चे, विशेषकर कक्षा 1-5 के, पैदल चलने में समर्थ हो जाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक परिवहन सीमित है, और अधिकांश परिवार साइकिल या अन्य निजी वाहनों का खर्च नहीं उठा सकते लेकिन निजी स्कूलों के बस की फीस दे लेते है । सरकार ने परिवहन सुविधा देने का कोई ठोस वादा नहीं किया जिसका नुकसान हुआ। स्कूलों का विलय बच्चों और अभिभावकों के मनोबल को बढ़ाएगी। निजी स्कूलों का उत्साह कमजोर करनें के लिए अच्छी मॉनिटरिंग और वाहन व्यवस्था कर सकती है, जिससे शिक्षा के प्रति उत्साह और मनोबल मजबूत होगा। इसके आलावा सांस्कृतिक और सुरक्षा कारणों से, ग्रामीण क्षेत्रों में माता-पिता अपनी बेटियों को दूर के निजी स्कूलों में भेजने से हिचकते हैं, जिससे लड़कियों की ड्रॉपआउट दर बढ़ रही थी अब विलय और अच्छी व्यवस्था से सुधार की आशा है। विदित हो कि इससे पहले राजस्थान और मध्य प्रदेश में स्कूलों का विलय किया गया था और इस विलय से पॉजिटिव फैक्ट सामने आए हैं। स्कूलों के विलय से माता-पिता को बच्चों के लिए परिवहन, यूनिफॉर्म या अन्य खर्चों का अतिरिक्त बोझ नहीं उठाना पड़ेगा, जो उनकी आर्थिक स्थिति के लिए सही है।

## अपनी समस्या हमें बतायें

**आपके साथ या आपके आस-पास कोई घटना, दुर्घटना, भ्रष्टाचार, जुर्म हुआ है या उत्पीड़न हुआ है अथवा आपके क्षेत्र की समस्या है और आपकी समस्या जायज है तो आपकी समस्याओं के समाधान हेतु सम्बन्धित उच्च अधिकारियों एवं शासन-प्रशासन तक पहुंचाने के लिये बी पी एस न्यूज आपके साथ है। आपकी खबर शत् प्रतिशत प्रकाशित की जायेगी। एवं आपका नाम व नम्बर आपके अनुसार प्रकाशित या पूर्णतया गुप्त रखा जायेगा।**

**दिये गये नम्बर पर काल करें या हमें ई मेल करें।**

**फोन नं.- 8423454502, bps.knp786@gmail.com**

## आवश्यक सूचना

**प्रिय ग्राहकों/विज्ञापनदाताओं को सूचित किया जाता है कि बी.पी.एस. न्यूज समाचार पत्र में नगद भुगतान की व्यवस्था नहीं है। कृपया चेक/डी.डी. बी पी एस न्यूज के नाम से ही चेक आदि भेजें। नगद भुगतान की व्यवस्था नहीं है। नगद भुगतान करने पर विज्ञापनदाता स्वयं जिम्मेदार होंगे। - संपादक**

## आवश्यकता है

**बी पी एस न्यूज राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक, साप्ताहिक समाचार पत्र व ऑनलाइन न्यूज चैनल ( पोर्टल ) के लिये समस्त तहसीलों एवं ब्लाक स्तर पर ब्यूरो चीफ, संवाददाताओं, छायाकार तथा विज्ञापन प्रतिनिधियों युवक-युवतियों की आवश्यकता है।**

**संपर्क करें -:**

मो.: 8423454502

email:bps.knp786@gmail.com

# व्यापारियों ने उठाई बाजारों में पार्किंग की मांग, बोले सर्वे के बाद करना पड़ रहा इंतजार

## व्यापारी बोले पूर्व में हुए सर्वे के बाद भी पार्किंग का इंतजार कर रहे व्यापारी

बीपीएस न्यूज

कानपुर,। शहर की बाजारों में पार्किंग व्यवस्था सहित अन्य मुद्दों पर बुधवार को व्यापारी नगर आयुक्त से मिले। मुलाकात के दौरान व्यापारियों ने बाजारों में पार्किंग न होने का मुद्दा उठाया। पदाधिकारी कृपाशंकर त्रिवेदी ने कहा कि पार्किंग की समस्या से इससे कारोबार पर सीधा असर पड़ रहा है। व्यापारियों ने यह भी कहा कि नगर निगम की ओर से पूर्व में शहर की कई बाजारों में पार्किंग के लिए सर्वे हुआ था। इस सर्वे के बाद भी अभी तक व्यापारी पार्किंग का इंतजार ही कर रहे हैं।

कानपुर उद्योग व्यापार मंडल के पदाधिकारियों ने नगर आयुक्त बढ़े हुए गृहकर के बिलों के विषय पर भी चर्चा की। इस चर्चा नगर आयुक्त से व्यापारियों ने किहा कि शहर में कामर्शियल व आवासीय भवनो पर नगर निगम द्वारा अत्याधिक गृह कर बढ़ा कर भेजा जा रहा है। इस पर विभाग की ओर से नोटिस भी जारी की जा रही है। इसी तरह जलकर व सीवरकर मे कई गुना बढ़ोतरी हो गयी है। उसमे अधिभार बहुत ज्यादा है, इसको माफ किये जाने का भी विषय उठाया है।

व्यापारियों की ओर से चुन्नीगंज कन्वेंशन सेंटर का नाम पूर्व सांसद व व्यापार मंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे श्याम बिहारी मिश्रा के नाम पर करने की भी मांग उठाई गई। कानपुर उद्योग व्यापार मण्डल के जिलाध्यक्ष सुनील बजाज व युवा अध्यक्ष सत्यप्रकाश जायसवाल के नेतृत्व में पहुंचे प्रतिनिधि मंडल ने नामांतरण शुल्क का भी विषय उठाया।

कहा गया कि पूरे प्रदेश मे एकसमान नामांतरण शुल्क का शासनादेश जारी होने के बावजूद इसका फायदा शहरवासियो को प्राप्त नही हो पा रहा है। शासन द्वारा जारी शासनादेश का पालन कर शहरवासियों को राहत प्रदान करने का कार्य किया जाये। इसके अलावा व्यापारियों की ओर से यह भी कहा कि कानपुर शहर स्वादिष्ट एवं लजीज व्यवंजनो के लिए पूरे देश मे प्रसिद्व है।

यहां के कई उत्पादो की मांग पूरे भारत मे है। अहमदाबाद,इंदौर की तर्ज पर फूड पार्क विकसित किया जाये

एवं उसमे शहर के व्यापारियो को प्राथमिकता दी जाये। ज्ञापन देने वालो मे सत्य प्रकाश जायसवाल, राहुल दीक्षित, अमित दोसर, रोमी सिंह, रामजी शुक्ला, मनीष बाजपेई, सचिन शुक्ला, रमाशंकर अग्रहरि, गीता गुप्ता, अंकित मिश्रा, ऋतिक, हिमांशु वैश्य सहित अन्य मौजूद रहे।

# चंद्रा हॉस्पिटल का लाइसेंस निरस्त, पुलिस करेगी अगली कार्रवाई, अस्पताल में हुई थी रोगी की मौत

कानपुर। चंद्रा हॉस्पिटल का लाइसेंस निरस्त किया जाएगा। सीएमओ कार्यालय ने नवीनीकरण के लिए आवेदन भी निरस्त किया। अस्पताल में रोगी की मौत हुई थी। जिसपर परिजनों ने सवाल उठाए थे।

स्वास्थ्य विभाग ने चंद्रा हॉस्पिटल का लाइसेंस निरस्त कर दिया है। साथ ही नवीनीकरण संबंधी उसका आवेदन खारिज कर दिया गया है। सीएमओ की ओर से पुलिस कमिश्नर को अग्रिम कार्रवाई के लिए पत्र भेज दिया गया है। इसमें कहा गया कि अवैध रूप से संचालित किए जाने के मामले में अस्पताल के खिलाफ कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

एसीएमओ (नर्सिंगहोम) डॉ. रमित रस्तोगी ने बताया कि कमिश्नरी पुलिस को पत्र भेजा गया है। उसके नवीनीकरण पर विचार नहीं किया जाएगा। पुलिस अब अस्पताल के खिलाफ कार्रवाई करेगी। इस मामले में थाना कल्याणपुर में एफआईआर भी दर्ज है। यह कार्रवाई अस्पताल में रसूलाबाद, कानपुर देहात के रोगी की मौत के मामले के बाद की गई है। इसके बाद जब स्वास्थ्य विभाग की टीम ने अस्पताल की जांच की तो बहुत गड़बड़ी मिलीं। यहां बिना मानक के आईसीयू चल रहा था। विभाग के नोटिस देने के बाद भी अस्पताल में रोगियों का इलाज चलता रहा था।

# प्रेमी से पत्नी के बात करने की आशंका पर पति ने काटी नाक, पुलिस ने आरोपी को हिरासत में लिया

बीपीएस न्यूज

हरदोई। प्रेमी से पत्नी के बात करने की आशंका पर पति ने उसकी नाक काट दी। घटना हरियावां थाना क्षेत्र के एक गांव की है। पत्नी को लखनऊ रेफर किया गया है।

हरियावां थाना क्षेत्र के एक गांव में विवाद के दौरान पति ने पत्नी की नाक काट ली। पत्नी को मेडिकल कॉलेज से लखनऊ ट्रामा सेंटर रेफर कर दिया गया है। पति को पुलिस ने हिरासत में लिया है। हरियावां थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी युवक बुधवार की शाम खेत से घर पहुंचा था। इस दौरान उसकी पत्नी कमरे में किसी से मोबाइल पर बात कर रही थी। पति ने ध्यान से सुना तो उसे लगा

कि पत्नी अपने प्रेमी से बात कर रही है। इस पर पति गुस्से में आ गया और उसने मोबाइल छीन लिया।

इसी को लेकर दोनों के बीच विवाद हो गया। गुस्से में पति ने पत्नी की नाक काट ली। पत्नी ने यूपी 112 पर सूचना दी तो पुलिस मौके पर पहुंची। उसे सीएचसी से मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया। मेडिकल कॉलेज में प्राथमिक उपचार के बाद उसे लखनऊ ट्रामा सेंटर रेफर कर दिया गया।

# ट्यूशन पढ़ाने निकले युवक का शव पटरियों के पास मिला, सिर में गंभीर चोट थी और कटे थे दोनों पैर

कानपुर। सेन पश्चिम पारा थानाक्षेत्र की पारा चौकी के पास रेलवे लाइन के किनारे युवक का शव पड़ा मिला। युवक ट्यूशन पढ़ाने के लिए घर से निकला था। शव मिलने की सूचना पर पहुंची पुलिस ने परिजनों को जानकारी दी और उसे पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। पालपुर साढ़ निवासी प्रेम कुमार यादव का बेटा नितिन सिंह (18) घर-घर जाकर बच्चों को ट्यूशन पढ़ाता था। भाई राघवेंद्र ने बताया कि रोजाना शाम 8 बजे वह घर आ जाता था। मंगलवार रात को जब वह नहीं लौटा तो तलाश की गई, लेकिन कुछ पता नहीं चला। रात में नितिन के मोबाइल से एक दरोगा का फोन आया और घटना के बारे में बताया। परिजन घटनास्थल पहुंचे जहां नितिन का शव पड़ा था। सिर में गंभीर चोट थी और दोनों पैर कटे थे। कुछ दूर पर उसकी बाइक खड़ी थी। परिजनों ने आशंका जताई है कि लघुशंका के दौरान वह ट्रेन की चपेट में आ गया। वहीं, पुलिस ने हादसे के साथ आत्महत्या की भी आशंका जताई है।

# तेज रफ्तार कार की टक्कर से बाइक सवार युवक ने दम तोड़ा, नहीं लगाए था हेलमेट

कानपुर। चकेरी फ्लाईओवर पर मंगलवार देर शाम को तेज रफ्तार कार की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत हो गई। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भिजवाया। बाइक चलाते समय युवक हेलमेट नहीं लगाए हुए था। देहली सुजानपुर केडीए कालोनी में सर्वेश कुमार पत्नी पूनम का बेटा हर्षित (23) रूमा स्थित कॉलेज से एमबीए की पढ़ाई कर रहा था। सोमवार को पूरा परिवार अयोध्या में रामलला के दर्शन करने के लिए गए थे।वहां से लौटकर सभी नरवल स्थित दलपतपुर गांव चले गए। हर्षित घर जाने के बाइक से निकला। चकेरी फ्लाईओवर पर पीछे से आ रही तेज रफ्तार कार ने बाइक में टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही हर्षित गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने उसे कांशीराम अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उसकी इलाज के दौरान मौत हो गई।थाना प्रभारी संतोष कुमार शुक्ला ने बताया कि सीसीटीवी फुटेज के आधार पर कार चालक की तलाश की जा रही है। आसपास के लोगों से पूछताछ की गई तो उसमें युवक के हेलमेट नहीं लगाए होने की जानकारी मिली है।

# 50 से ज्यादा झोपड़ियों में लगी भीषण आग, धमाकों से दहला इलाका,खंभे से गिरी चिंगारी से हुआ हादसा

बीपीएस न्यूज

कानपुर। पनकी इलाके में 50 से ज्यादा झोपड़ियों में भीषण आग लग गई। देर रात खंभे से गिरी चिंगारी से हादसा हुआ है। सूचना पर पहुंचे दमकल के आठ वाहनों ने डेढ़ घंटे में आग पर काबू पाया।

कानपुर में पनकी थाना क्षेत्र के रतनपुर में मंगलवार देर रात खंभे से गिरी चिंगारी के कारण सड़क किनारे की 50 से ज्यादा झोपड़ियां चपेट में आ गई। जब तक लोग फायर बिग्रेड पुलिस पुलिस को सूचना देते आग ने विकराल रूप ले लिया।

सोते समय हुई घटना के कारण अफरातफरी मच गई। किसी तरह पीड़ितों ने अपने आशियाना से भागकर जान बचाई। झोपड़ियों में भीषण आग के कारण एक के बाद एक धमाके हुए, जिससे पूरा इलाका दहल गया। लोगों की सूचना पर फायर ब्रिगेड पहुंची और आग को काबू करने के प्रयास शुरू किए। ग

पनकी के शताब्दी नगर रतनपुर में सड़क किनारे 50 से ज्यादा झोपड़ियों में सैकड़ों लोग गुजर बस करते हैं। रात करीब एक बजे बस्ती के ऊपर खंभे से निकली चिंगारी किसी झोपड़ी में पड़ी गई। मिनटों में झोपडी में लगी आग ने एक के बाद एक झोपड़ियों को अपनी चपेट में ले लिया।

आग लगने से लोग अपने गृहस्थी लेकर जान बचाकर भागे। झोपड़ियों के अंदर सो रहे बच्चों और महिलाओं को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा। झोपडियों के अंदर रखे सिलेंडर और स्टोफ फटने से तेज धमाके हुए। आग की घटना से महकमे में हडकंप मच गया।

दमकल की छह गाड़ियां बस्ती के चारों तरफ से पानी डालकर आग बुझाने में लगी हैं। कई किमी तक से आग के भयावह नजारा साफ देखने लगे। आग से गरीबों की गृहस्थी जलने से बिलखने लगे। पनकी, अरमापुर, सचेंडी समेत कई थानों का फोर्स मौके पर पहुंचा।

मुख्य अग्निशमन अधिकारी दीपक शर्मा ने बताया कि फायर ब्रिगेड की आठ गाड़ियों ने आग पर काबू पाया है। झोपड़ियों से सभी को बाहर सुरक्षित निकाल लिया गया है। हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ है। नुकसान का आकलन किया जा रहा है।

# भारत सरकार लिखी स्कॉर्पियो ने बाइक सवार को मारी टक्कर, मौत

बीपीएस न्यूज

कानपुर। स्कॉर्पियो ने बाइक सवार को टक्कर मार दी। जिसमें उसकी मौत हो गई। हादसा सीओडी पुल के पास मंगलवार सुबह हुआ। सीओडी पुल के पास मंगलवार सुबह तेज रफ्तार स्कॉर्पियो की टक्कर से बाइक सवार की मौत हो गई। राहगीरों की सूचना पर पुलिस ने गाड़ी पकड़ ली। इस दौरान चालक मौके से फरार हो गया। गाड़ी में भारत सरकार लिखा है। चकेरी थाना क्षेत्र के गणेशपुर निवासी रामकिशोर साहू (40) जरीबचौकी चौराहे पर स्थित एक प्लाईवुड की दुकान में काम करते थे। छोटे भाई श्यामू ने बताया कि वह रोज की तरह मंगलवार सुबह 10:30 बजे घर से डयूटी जाने के लिए निकले थे।

श्यामनगर के आगे सीओडी पुल पर चढ़ते ही रामादेवी की ओर से आ रही तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने टक्कर मार दी। इससे वह कुछ दूर घिसटते चले गए। भाई के अनुसार, टक्कर इतनी जबरदस्त थी, कि हेलमेट के टुकड़े सिर व चेहरे में घुस गए और उनकी मौके पर मौत /हो गई थी। मृतक की पत्नी गीता, बेटी दिव्यांशी और बेटे आयुष का रो रोकर हाल बेहाल है।

चकेरी इंस्पेक्टर संतोष कुमार शुक्ला ने बताया कि गाड़ी श्यामनगर गंगानगर निवासी लियाकत अली के नाम दर्ज है। गाड़ी चालक के बारे में पता किया जा रहा है। परिजनों की तहरीर के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

# कानपुर - भाजपा के दो और विधायक सीएमओ के समर्थन में उतरे

## एमएलसी विधायक अरुण पाठक व विधायक सुरेंद्र मैथानी ने लिखा पत्र

बीपीएस न्यूज

कानपुर। डीएम जितेंद्र प्रताप सिंह और सीएमओ डॉ.हरिदत्त नेमी के बीच चल रही खींचतान में भाजपा विधायक भी मैदान में उतर गए हैं।

विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना के बाद भाजपा के दो और विधायकों ने सीएमओ का न सिर्फ पक्ष लिया, बल्कि उनका स्थानांतरण न किए जाने के संबंध में उप मुख्यमंत्री व स्वास्थ्य मंत्री ब्रजेश पाठक को भी पत्र लिख दिया है, जिसमे उन्होंने सीएमओ को कानपुर नगर में ही बनाये रखे जाने का आग्रह किया है।

सोशल मीडिया में एक ऑडियो इन दिनों वायरल है, जिसमे एक व्यक्ति डीएम के खिलाफ अपत्तिजनक शब्दों का प्रयोग कर रहा है। यह ऑडियो सीएमओ डॉ.हरिदत्त नेमी का बताया जा रहा है, जब इस संबंध में डीएम ने सीएमओ से जानकारी की तो उन्होंने साफ इंकार कर दिया और इस ऑडियो को ऑर्टिफिशियल इंटेलीजेंस द्वारा बनाकर बदनाम करना बताया। साथ ही सीएमओ ने अपने ऊपर लगे सभी आरोपों से इंकार किया। मामले में एमएलसी विधायक अरुण पाठक ने स्वास्थ्य मंत्री ब्रजेश पाठक को पत्र लिखा है, जिसमे उन्होंने कहा है कि डॉ.हरिदत्त नेमी का कार्य व व्यवहार आम जानमानस और जन प्रतिनिधियों के समक्ष मृदुल व सराहनीय है।

आम जनमानस के हित में केंद्र सरकार व प्रदेश सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन सीएमओ द्वारा बहुत ही लगन से किया गया है। आग्रह है कि आम जानमानस व जन प्रतिनिधियों की भावनाओं के समादर में डॉ.हरिदत्त नेमी को यथावत् कानपुर नगर में ही बनाए रखे जाने के लिए नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही की जाए।

गोविंद नगर से भाजपा विधायक सुरेंद्र मैथानी ने उप मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर सीएमओ की प्रशंसा की है और उन्होंने प्रबल संस्तुति की है कि सीएमओ को कानपुर नगर में ही बनाए रखा जाए। मामले में सीएमओ डॉ.हरिदत्त नेमी का कहना है कि व्यवस्था सुधारने के लिए उन्होंने विभाग में सख्ती की है, जिसकी वजह से नाखुश लोगों ने उनके बारे में डीएम को गलत फीड दिया है।

एक फर्म का भुगतान रोकने व विभागीय पटल तो नहीं मामले की वजह

सीएमओ डॉ.हरिदत्त नेमी के आने से पहले स्वास्थ्य विभाग में एक फर्म को जिले में दवा सप्लाई करने का सौदा तय हुआ था, जिसका भुगतान करीब डेढ़ करोड़ होना है। सीएमओ ने के पास जब इसके भुगतान की फाइल पहुंची तो उनको अनियमिकता मिली, जिसके बाद उन्होंने फर्म का भुगतान रोक दिया।

वहीं, विभागीय पटल से नाराज लोगों द्वारा भी साजिश रची जा सकती है। बताया कि डैश बोर्ड की बैठक से बाहर निकाला जाना एक अपमानजनक स्थिति है। कुछ लोगों ने ऑडियो क्लिप बनवाकर सोशल मीडिया पर शेयर की है, जिसका संबंध उनसे नहीं है। बदनाम करने की साजिश है।

# केडीए का बुलडोजर चला, 15 साल बाद आवंटी को मिला कब्जा

कानपुर। केडीए जोन तीन के प्रवर्तन दस्ते ने बुधवार को बर्रा बाईपास किनारे बुलडोजर चलाकर आरा मशीन के कब्जे से जमीन खाली कराई। आवंटी शशि पांडेय को 15 साल बाद वहां प्लाट का कब्जा दिया गया। जोन-3 में बाईपास के किनारे स्थित बसंत पेट्रोल पंप के पास विकास प्राधिकरण ने 15 साल पहले शशि पांडेय को 200 वर्गमीटर का प्लाट आवंटित किया था। उक्त जमीन पर अवैध कब्जा कर जमीन और आसपास की जमीन पर आरा मशीन चल रही थी। आरोप था कि एक पूर्व पार्षद का अवैध कब्जा था। जोन-3 के प्रवर्तन दस्ते ने अवर अभियंता रामदास के नेतृत्व में पुलिस के सहयोग से बुलडोजर चलाकर अवैध कब्जा ध्वस्त किया।

# समन्वय बैठक में सांसद रमेश अवस्थी बोले- मंडल अध्यक्षों को थाना दिवसों पर बुलाया जाए

कानपुर। कानपुर की समस्याओं से पुलिस को रूबरू कराने और उनके निस्तारण के लिए भाजपा मंडल अध्यक्षों को थाना दिवस पर बुलाने के लिए सांसद रमेश अवस्थी ने पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार से कहा है। मंगलवार को वह सीपी कार्यालय में जिलाध्यक्षों व मंडल अध्यक्षों के साथ समन्वय बैठक कर रहे थे।

इस दौरान दक्षिण जिलाध्यक्ष शिवराम सिंह ने किदवई नगर के साकेत नगर, कंजरन पुरवा, गुजैनी में वरुण बिहार कच्ची बस्ती और बर्रा आठ में देशी शराब ठेके के सामने खुले आम स्मैक, चरस, अफीम, गांजा सहित कई तरह के मादक पदार्थों की बिक्री का मामला उठाया। बताया कि इस रैकेट में महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। उन्होंने नौबस्ता चौराहे पर अवैध टैक्सी, टैंपो स्टैंड का भी मुद्दा उठाया। इसी तरह उत्तर जिलाध्यक्ष अनिल दीक्षित ने कल्याणपुर और डबल पुलिया में पेट्रोल पंप के पीछे अवैध बस्ती में खुले आम मादक पदार्थों की बिक्री होने की शिकायत की। इस मौके पर बिट्टू परिहार, दीपू पासवान, दीपांकर मिश्रा, सनी जायसवाल, ओपी आर्या, सुमित तिवारी, विनीत दुबे, सुमित पावा, विजय पटेल मौजूद रहे।

# सेना में लेफ्टिनेंट बनकर अपने दादा व पिता का नाम किया रोशन

कानपुर। कहते हैं मंजिल उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है, पंख से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है। उक्त कहावत को चरितार्थ किया है कस्बा निवासी रोहन त्रिपाठी ने। पारिवारिक सैन्य परंपरा को कायम रखते हुए बेहद कम उम्र में रोहन ने भारतीय सेवा में लेफ्टिनेंट का पद हासिल कर अपने गाँव व जनपद का नाम रोशन किया है।

चौबेपुर पड़ाव निवासी लेफ्टिनेंट कर्नल पी एन त्रिपाठी के बेटे राजेश त्रिपाठी ने पिता के कदमों पर चलते हुए आर्मी में जाने का निर्णय लिया और मौजूदा समय में वह लेह मे लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर तैनात हैं। इधर राजेश त्रिपाठी के बेटे रोहन ने सेना में लेफ्टिनेंट बनकर तीसरी पीढ़ी मे भी सैन्य परंपरा को कायम रखा है। एनडीए के माध्यम से सीधे लेफ्टिनेंट बनकर देश की रक्षा व सेवा का सपना संजोये रोहन की इस कामयाबी से परिवार ही क्या संपूर्ण क्षेत्र वासियों को गर्व है।बता दे कि रोहन ने वर्ष 2019 में आर्मी पब्लिक स्कूल बेंगदुबी, सिलीगुड़ी से हाई स्कूल की परीक्षा 98.8 फीसदी अंकों के साथ उत्तीर्ण कर देश भर के आर्मी स्कूलों में प्रथम स्थान हासिल किया था। वहीं वर्ष 2021 में आर्मी पब्लिक स्कूल धौला कुआं दिल्ली से इंटरमीडिएट की परीक्षा 98.6 फीसदी अंकों से उत्तीर्ण की। इसी वर्ष यूपीएससी परीक्षा में पहले ही प्रयास में एनडीए की परीक्षा पास की। तीन वर्ष पुणे में प्रशिक्षण के बाद आई एम ए देहरादून से एक वर्ष का प्रशिक्षण लेने के बाद मात्र 21 वर्ष 6 माह की छोटी उम्र में उन्होनें 16 जून को सेना मे लेफ्टिनेंट का पद हासिल कर लिया। रोहन अपने माता-पिता की इकलौती संतान हैं। पिता राजेश लेफ्टिनेंट कर्नल व मां भावना त्रिपाठी ग्रहणी हैं। रोहन की इस उपलब्धि से उनके पारिवारिकजनों के साथ क्षेत्रवासियों में भारी खुशी व्याप्त है।

## चाइल्ड हेल्पलाइन ने नाबालिग की शादी रुकवाई

चित्रकूट। चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 की टीम ने सीतापुर के एक गांव में 14 वर्ष की बालिका का विवाह रुकवा दिया। प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर विशेष कुमार त्रिपाठी ने मामले की सूचना जिला प्रोबेशन अधिकारी प्रगति गुप्ता एवं बाल संरक्षण अधिकारी डॉ. सौरभ सिंह को दिया।

जिला प्रोबेशन अधिकारी के नेतृत्व में चाइल्ड हेल्पलाइन की टीम से प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर, महिला सुपरवाइजर दीपा शुक्ला, सुपरवाइजर रामचंद्र एवं अवधलाल सीतापुर पुलिस चौकी के कांस्टेबल रविंद्र के साथ विवाह स्थल पर पहुंचे। काफी विरोध के बाद टीम ने पुलिस की मदद से बालिका को रेस्क्यू कर लिया । बालिका को बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष राकेश माथुर के समक्ष प्रस्तुत करने के बाद वन स्टॉप सेंटर में अग्रिम कार्रवाई तक के लिए रोका गया है।

## संपूर्ण समाधान दिवस- साहब... लेखपाल रुपये लेने के बाद भी नहीं कर रहे पैमाइश, डीएम ने दिए जांच के आदेश

कानपुर। नरवल तहसील में शनिवार को संपूर्ण समाधान दिवस पर जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने नरवल के चकबंदी लेखपाल पर रुपये वसूलने का आरोप लगने के बाद सख्त हिदायत दी। सुनवाई के कुछ ही देर बाद उसी लेखपाल पर एक और व्यक्ति ने पैसे मांगने का आरोप लगाया तो जिलाधिकारी ने एसओसी चकबंदी को बुलाकर लेखपाल के खिलाफ विभागीय जांच के आदेश दिए। निर्देश दिया कि एक सप्ताह के भीतर पूरी कार्यवाही से उन्हें अवगत कराएं।

दिव्यांग राकेश प्रजापति ने जिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देते हुए बताया कि नरवल की ही रहने वाली शांति देवी की जमीन की पैमाइश होनी थी। शांति देवी मेरे मित्र की मां हैं, जो की विधवा है। उनका पूरा काम मैं ही देखता हूं। आरोप लगाया कि पैमाइश के लिए लेखपाल ने 90 हजार रुपये की मांग की थी। अस्सी हजार उनकी कार के अंदर दिए तथा दस हजार रुपए खेत पर दिए थे। कुछ जमीन की माप कर ली व बाकी की पैमाइश के लिए 20 हजार रुपये और मांगने लगे। इसी तरह मनीष सिंह ने बताया कि उनके पिता राजेंद्र प्रताप की 24 अगस्त 2022 को मौत हो गई थी।

वरासत चढ़ाने के लिए लेखपाल 20 हजार रुपए मांग रहे हैं। संपूर्ण समाधान दिवस में कुल 185 शिकायत आई। इनमें आठ का मौके पर निस्तारण किया गया। इस मौके पर मुख्य चिकित्साधिकारी उदयनाथ, उपजिलाधिकारी विवेक कुमार मिश्रा, डीसीपी सत्यजीत गुप्ता, तहसीलदार विनीता पांडेय सहित संबंधित विभागों के अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

# अस्तित्व बचाओ भाईचारा बनाओ प्रबुद्धजन सम्मेलन का आयोजन

बीपीएस न्यूज

कानपुर। आज़ाद समाज पार्टी (कांशीराम) के तत्वाधान में अस्तित्व बचाओ- भाईचारा बनाओ प्रबुद्धजन सम्मलेन का आयोजन 21 जून 2025 दिन शनिवार को लाजपत भवन, मोतीझील, कानपुर नगर में कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें कानपुर शहर, कानपुर ग्रामीण, कानपुर देहात, औरैया, कन्नौज, फारुखाद व इटावा आदि से 10000 से अधिक प्रबुद्ध लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की।कार्यक्रम मे जिसमे मुख्य अतिथि नगीना (उ.प्र.)

सांसद, भीम आर्मी चीफ, आज़ाद समाज पार्टी (कांशीराम) राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट चंद्र शेखर आज़ाद सम्मलित हुए व विशिष्ठ अतिथि सुनील चित्तौड़ सम्मिलित थे। नगीना सांसद चंद्रशेखर आजाद ने अपने भाषण में कहा कि संविधान को जो लेकर चलेगा वही आगे बढ़ेगा पढ़ लिख कर आगे बढ़ो समाज मजबूत और कामयाब होगा हम संख्या बल में इतनी ज्यादा है कि पूरे प्रदेश में राज कर सकते हैं जिसमे प्रदेश संगठन मंत्री मुख्य मंडल प्रभारी (कानपुर) राम गोपाल के द्वारा कार्यक्रम को संबोधित किया गया जिसमे उन्होंने 21 जून 2025 को अस्तित्व बचाओ भाईचारा - चनाओ प्रयुद्धजन सम्मलेन में होने वाले मुख्य मुद्दों पर प्रकाश डाला, जो की कुछ इस प्रकार थी आवादी के हिसाब से बहुजन समाज की संख्या 85त्न है, अत: 85त्न आरक्षण बहुजन समाज का होना चाहिए ।निजीकरण बंद किया जायें व निजीकरण किये हुए विभागों में आरक्षण लागु होना चाहिए ।बहुजन समाज पर लगातार हो रहे अन्याय, अत्याचार, बलात्कार जैसी घटनायें बन्द करो। एससी एसटी ओबीसी के लोगों को भूमि के पट्टे पर कब्जा दिलाओं व जिन्होंने एससी एसटी ओबीसी के पट्टों पर अबैध कब्जा किया हुआ है उन्हें मुक्त कराओ। इस अवसर पर आज़ाद समाज पार्टी (कां0) के प्रदेश अध्यक्ष (उ.प्र.) सुनील कुमार चित्तौड़ जी, भीम आर्मी प्रदेश सह-संयोजक भाई कौशल वाल्मीकि जी, आसपा कां रामगोपाल प्रदेश संगठन मंत्री कानपुर मंडल मुख्य प्रभारी, धीरेंद्र कबीर कानपुर मंडल प्रभारी सिद्धार्थ शर्मा विश्वकर्मा महानगर अध्यक्ष आदि लोग उपस्थित रहे।

## धोखाधड़ी और जालसाजी करने वालों पर करें गैंगस्टर की कार्रवाई

बीपीएस न्यूज

कानपुर । आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) की डीजी नीरा रावत ने धोखाधड़ी और जालसाजी करने वाले बड़े मामलों के आरोपियों पर गैंगस्टर की कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। गुरुवार को वह कानपुर में ईओडब्ल्यू कार्यालय पहुंची। निरीक्षण के दौरान विवेचनाओं को गुणवत्तापूर्ण और समय से निस्तारित करने के लिए कहा।

इसके बाद उन्होंने कई लंबित मामलों की जानकारी ली। कुछ लंबित विवेचनाओं में नाराजगी भी जाहिर की। डीजी ने 10 से 15 करोड़ की ठगी वाली विवेचनाओं पर सवाल जवाब किए। उन्होंने कहा कि गिरफ्तारी से पूर्व पर्याप्त साक्ष्य संकलन जरूर करें ताकि कोर्ट में आरोपियों को राहत न मिल सके।

आर्थिक अपराध शाखा की महानिदेशक ने किया निरीक्षण - फोटो ÷ अमर उजाला

डीजी ने निरीक्षकों और अन्य स्टाफ के साथ भी बैठक की। इस दौरान आईजी ईओडब्ल्यू के सुनील इमैनुअल, एसपी हफीजुर रहमान व अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

# एक्सप्रेसवे पर बस में पीछे से टकराई कार, दरोगा की मौत और सिपाही सहित पांच घायल

बीपीएस न्यूज

बांगरमऊ । टोल प्लाजा पर बस चालक के अचानक ब्रेक लगाने से दर्दनाक हादसा हो गया। मामले में कोतवाल चंद्रकांत सिंह ने बताया कि घटना में दरोगा की मौत हुई है और सिपाही सहित पांच लोग घायल हैं।

उन्नाव जिले में लखनऊ-आगरा एक्सप्रेसवे पर बांगरमऊ स्थित टोल प्लाजा के पास शुक्रवार सुबह साढ़े पांच बजे बस के चालक ने अचानक ब्रेक लगा दी। इसके चलते अर्टिगा कार बस में पीछे से टकरा गई। हादसे में कार चला रहे दरोगा की मौत हो गई, जबकि एक सिपाही सहित पांच लोग घायल हो गए। घायलों को सीएचसी से जिला अस्पताल रेफर किया गया है।

हादसे के बाद बस छोड़कर चालक भाग गया। अमेठी जिले के थाना गुरसहायगंज निवासी सूरज (25) गांव की ही 19 साल की युति को साथ लेकर सात जून को राजस्थान के जोधपुर के गांव पाली लेकर चला गया था। युवती के पिता ने युवक पर बेटी के अपहरण की रिपोर्ट दर्ज कराई थी ।लोकेशन मिलने पर अमेठी सदर कोतवाली में तैनात दरोगा मंजीत सिंह (35) एक सिपाही के साथ युवती के मामा थाना संग्रामपुर के गांव गपवन निवासी पवन, उसके दोस्त धर्मेंद्र और सुल्तानपुर जिले के थाना बिहार के गांव हरीपुर बंधना निवासी संतोष के साथ मंगलवार रात राजस्थान गए थे। युवक और युवती को लेकर अमेठी लौट रहे थे। एक्सप्रेसवे पर बांगरमऊ स्थित टोल प्लाजा के पास सुबह साढ़े पांच बजे टोल प्लाजा के पास एक स्लीपर बस के चालक ने अचानक ब्रेक लग दी। इससे कार चला रहे दरोगा मंजीत सिंह नियंत्रित नहीं कर पाए और कार बस में पीछे से टकरा गई।

कार में फंसे दरोगा को निकालने में करीब दो घंटे लग गए और उनकी मौत हो गई। युवक, युवती के अलावा, सिपाही, पवन और संतोष घायल हो गए। वहीं, धर्मेंद्र बाल-बाल बच गया। हादसे के बाद बस के दोनों चालक बस छोड़कर भाग गए। घायलों को स्वास्थ्य केंद्र से जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया।

## झमाझम बारिश से जलभराव, जल निकासी की खुली पोल

कानपुर देहात। उमस भरी गर्मी के बीच गुरुवार शाम आसमान में बादल छा गए। शाम चार बजे से गरज चमक के साथ बारिश हुई। झमाझम बारिश से मौसम में ठंडक हुई, लेकिन कई इलाकों में जलभराव हो गया। इससे जल निकासी की पोल खुल गई। देर रात तक रुक-रुक कर बारिश होती रही। इससे कई इलाकों की बिजली गुल रही।

गुरुवार शाम चार बजे के करीब आसमान में काले बादल छा गए। कुछ देर बाद ही तेज हवा संग गरज चमक के साथ बारिश शुरू हो गई। बारिश से अकबरपुर ओवर ब्रिज, मेडिकल कॉलेज परिसर समेत गली मोहल्लों में जलभराव हो गया। रूरा में सीएचसी के पीछे शास्त्री नगर सड़क के साथ अंडरपास पर पानी भर गया। इससे लोगों को आवाजाही में परेशानी उठानी पड़ी। पैदल राहगीर नहीं निकल सके ।इसके अलावा रूरा के बाजार वार्ड, जवाहर नगर, गांधी नगर, शास्त्रीनगर में जलभराव हो गया। नाला ओवर फ्लो होने से घरों व दुकानों तक तक पानी पहुंच गया। अकबरपुर में गांधी नगर, नयागंज, नेहरू नगर में जलभराव से परेशानी हुई। रनियां में किशरवल रोड पर नाला चोक होने से हाईवे की सड़क पर जलभराव हो गया। इससे वाहनों को निकलने में परेशानी होती रही। पहली बारिश ने जल निकासी व्यवस्था की कई इलाकों में पोल खोल कर रख दी। डीएफसीसी के असिस्टेंट मैनजर अमित कनौजिया ने बताया की अंडरपास में भरे पानी के निकास के लिए दो पंपिंग सेट लगाए गए हैं। पानी निकाल कर आवागमन चालू कराया जाएगा ।आगामी पांच दिनों में हल्के बादल रहने के कारण मध्य तेज हवाओं, गरज चमक के साथ स्थानीय स्तर पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।

## बारिश से ठप हुए 47 उपकेंद्र, 2.75 लाख घरों की बिजली गुल

कानपुर देहात। हवा चलने के साथ हुई झमाझम बारिश से गुरुवार को बिजली आपूर्ति बेपटरी हो गई। 2.75 लाख घरों में गुल हुई बिजली से लोग परेशान रहे। पांच घंटे बाद आंशिक जगह बिजली आपूर्ति बहाल हो सकी। वहीं कई इलाकों में पूरी रात बिजली नहीं आई ।अकबरपुर में बारिश शुरू होते ही बिजली बंद कर दी गई। रात आठ बजे तक बिजली आपूर्ति बहाल नहीं हो सकी। मेन लाइनों में कई जगह फाल्ट हो गई। इस पर बिजली निगम के कर्मचारी पेट्रोलिंग करके फाल्ट खोजते रहे। पांच घंटे से अधिक तक बिजली न आने से लोगों के घरों के इनवर्टर ठप हो गए। इधर देर रात रनियां, रायपुर, माती, पुखरायां, सिकंदरा आदि जगह बिजली आपूर्ति बहाल की जा सकी। कई स्थानों पर देर रात तक बिजली आपूर्ति बहाल नहीं हो सकी। पेड़ों की डालें तार आने से हुए फाल्ट से अधिक समस्या रही। अधिकांश ग्रामीण क्षेत्र में शुक्रवार को बिजली आपूर्ति बहाल होने की उम्मीद है प्रभारी अधीक्षण अभियंता सुमित व्यास ने बताया कि हवा संग बारिश से फाल्ट के चलते बिजली आपूर्ति बाधित रही। 33 केवी लाइनें प्राथमिकता में पहले ठीक कराई गईं। इसके बाद नगरीय क्षेत्र में बिजली आपूर्ति बहाल की गई। कई गांवों में देर रात तक बिजली आपूर्ति सुचारु होने की उम्मीद है। बारिश होने से गर्मी से लोगों को राहत मिली है। वहीं किसानों ने चेहरे पर खुशी दिखाई दी। धान की फसल तैयार करने की तैयारी कर रहे किसान बेड़ बोने के साथ खेतों में पानी भरने से धान बुआई को लेकर खुश है। गुरुवार को अकबरपुर, रसूलाबाद, रनियां, पुखरायां, सिकंदरा, झींझक, शिवली, रूरा आदि इलाकों में तेज बारिश हुई। इससे धान की बुआई शुरू हो सकेगी।

# बेसमेंट की खुदाई से पीएनजी लाइन टूटी, गैस रिसाव से दहशत, जेसीबी चालक वाहन लेकर भागा

कानपुर। भौंती स्थित जिला सहकारी बैंक के पास गुरुवार दोपहर प्लॉट में बेसमेंट की खुदाई के दौरान पीएनजी लाइन टूट गई। गैस का रिसाव होने से लोगों में दहशत फैल गई। पड़ोसी की सूचना पर फायर ब्रिगेड और सीयूजीएल की टीम मौके पहुंची। लाइन दुरुस्त होने पर लोगों ने राहत की सांस ली।भौंती जिला सहकारी बैंक के पास राम पांडे ने प्लॉट खरीदा है। प्लॉट में लगभग एक सप्ताह से बेसमेंट खोदने का काम चल रहा है। गुरुवार दोपहर करीब डेढ़ बजे जेसीबी से खुदाई चल रही थी। तभी पीएनजी की लाइन टूट गई। गैस का रिसाव होने लगा तो जेसीबी चालक घबराहट में जेसीबी लेकर भाग गया। पड़ोसी रविंद्र कुमार ने सचेंडी पुलिस को सूचना दी। मौके पर फायर ब्रिगेड की दो गाड़ी और सीयूजीएल की मेंटीनेंस टीम पहुंची और पाइप लाइन को दुरुस्त किया।

करीब बीस मिनट तक गैस का रिसाव होता रहा। इलेक्ट्रीशियन महेंद्र कुमार, लाइनमैन कुलदीप ने कहा कि प्लॉट मालिक को 10 दिन पहले यहां आकर बेसमेंट खोदने के लिए मना किया था। सचेंडी इंस्पेक्टर दिनेश सिंह बिष्ट ने बताया कि पीएनजी लाइन टूटने की सूचना मिली थी, कोई नुकसान नहीं हुआ है।

## कौशाम्बी की नाबालिग रेप पीडित बेटी को न्याय दिलाने के लिये ज्ञापन

कानपुर। अखिल भारतीय पिछड़ावर्ग फेडरेशन व सामाजिक संगठनो का संयुक्त मंच द्वारा दिनॉक 20-06-2025 को बलात्कारी सिद्धार्थ तिवारी को जमानत देने के विरोध मे कानपुर जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री उ0प्र0 शासन को ज्ञापन दिया !विवेक पाल ने बताया कि ग्राम लोहंडा थाना सैनी जनपद कौशांबी में 8 वर्षीय नाबालिक बेटी के साथ यौन शोषण गांव के ही सिद्धार्थ पुत्र स्व0 रामबाबू तिवारी द्वारा किया जाता है जिसमें पुलिस प्रशासन द्वारा मुकदमा दर्ज कर अपराधी को जेल भेज दिया जाता है। अपराधी के पिता बेटे के कृत से लोक लाज के कारण जहर खा लेते हैं और उनकी मृत्यु हो जाती है जिसमें शासन के दबाव में निर्दोष पीड़िता के पिता, चाचा, व भाई को अभियुक्त बनाकर जेल भेज दिया जाता है और अपराधी सिद्धार्थ तिवारी उर्फ धुन्नू को जमानत दे दी जाती है तथा साथ में वर्तमान ग्राम प्रधान भूपनारायण पाल को ?25000 का इनाम घोषित कर एनकाउंटर की कार्रवाई कर दी जाती है जो न्याय संगत नहीं है सरकार मे बैठे कुछ मनुवादी लोग मनमाने तरीके से कानून से खिलवाड़ कर रहे है जिससे पूरी जनता दुखी है*संयोजक गोविन्द नारायण ने कहा कि हम ये मांग करते हैं कि उक्त घटना घटना की सीबीआई जांच हो, पीड़िता के परिवार की सुरक्षा की जाये, वर्तमान ग्राम प्रधान भूत नारायण पाल पर इन्काउंटर की कार्यवाही तत्काल प्रभाव से समाप्त किया जाये, पीड़ित के पिता, चाचा, भाई को जेल से रिहा कराया जाए, पीड़िता का परिवार आर्थिक तंगी व भुखमरी का शिकार है ।

# समाज कल्याण अधिकारी ने बाबुओं पर लगाया वसूली का आरोप, पत्र वायरल डीएम ने लिया संज्ञान

बीपीएस न्यूज

कानपुर। सोशल मीडिया पर वायरल तीनों पत्र में बाबुओं को जिले से हटाकर किसी अन्य जिले में तैनात करने का अनुरोध समाज कल्याण निदेशक से किया गया है। वायरल पत्रों का जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने संज्ञान लिया है। उन्होंने मामले की जांच कराने की बात भी कही।

कानपुर में गुरुवार को सीएमओ के निलंबन के बाद समाज कल्याण विभाग में तैनात तीन बाबुओं और एक ऑपरेटर के खिलाफ भी कार्रवाई के पत्र सोशल मीडिया पर वायरल हो गए। जिला समाज कल्याण अधिकारी शिल्पी सिंह ने इन कर्मियों को जिले से हटाने के लिए समाज कल्याण निदेशक को तीन पत्र लिखे हैं।

उन्होंने सरकारी योजनाओं की सहायता राशि में धन वसूली और कार्य के प्रति लापरवाही बरतने का आरोप लगाया है। यह पत्र समाज कल्याण अधिकारी ने 11 जून को लिखे थे। सोशल मीडिया पर पत्र वायरल होने पर तरह-तरह की चर्चाएं हो रही हैं। दरअसल, सीएमओ के कथित रूप से ऑडियो और जनप्रतिनिधियों के लिखे पत्र वायरल होने के बाद शासन से तुरंत निलंबन की कार्रवाई हो गई।

कर्मचारियों को हटाने के लिए भेजा है पत्र

ऐसे में इन्हें जल्द कार्रवाई की कोशिश से जोड़कर देखा जा रहा है। समाज कल्याण विभाग विभाग में लगातार एक के बाद एक चर्चाएं शुरू हैं। विभाग के जिन कर्मचारियों ने जिलाधिकारी और उच्च अधिकारियों से समाज

कल्याण अधिकारी की शिकायत की थी, अब उन्हीं कर्मचारियों को जिले से हटाने के लिए निदेशक को पत्र भेजा है।

**कर्मचारियों को हटाने के लिए भेजा है पत्र**

ऐसे में इन्हें जल्द कार्रवाई की कोशिश से जोड़कर देखा जा रहा है।

समाज कल्याण विभाग विभाग में लगातार एक के बाद एक चर्चाएं शुरू हैं। विभाग के जिन कर्मचारियों ने जिलाधिकारी और उच्च अधिकारियों से समाज

कल्याण अधिकारी की शिकायत की थी, अब उन्हीं कर्मचारियों को जिले से हटाने के लिए निदेशक को पत्र भेजा है।

**लगातार मिल रही हैं धन वसूली की शिकायतें**

समाज कल्याण अधिकारी ने पहला पत्र कनिष्ठ सहायक प्रेम शरण के खिलाफ लिखा। इसमें बताया कि नौ वर्ष से कार्यालय में तैनात प्रेम शरण राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना, अनुसूचित जाति, जनजाति अत्याचार उत्पीड़न पटल देखते हैं। इनके खिलाफ लगातार धन वसूली की शिकायतें मिल रही हैं। धन वसूली के ऑडियो, वीडियो भी पीड़ितों ने सौंपे हैं।

**फर्जीवाड़े के अभिलेख भी गायब कर दिए**

इन्होंने वर्ष 2021 में शादी अनुदान, पारिवारिक लाभ योजना में हुए फर्जीवाड़े के अभिलेख भी गायब कर दिए हैं। इस मामले में विभाग में तैनात कंप्यूटर आपरेटर रितेश कुमार की मिलीभगत बताई। दूसरा पत्र कनिष्ठ सहायक सुनील वर्मा के खिलाफ लिखा। इसमें उन्होंने सुनील को 10 वर्ष से कार्यालय में तैनात बताया।

फर्जी तरीके से आवास आवंटन प्रमाणपत्र जारी करने का आरोप

इन पर उन्नयन बस्ती में फर्जी तरीके से आवास आवंटन प्रमाणपत्र जारी करने का आरोप लगाया। साथ ही वर्ष 2023-24 में छात्रों का अध्ययन पूर्ण न करते हुए पाठ्यक्रम अधूरा छोड़ने और छात्रों की छात्रवृत्ति संबंधित हार्ड कापी उपलब्ध न कराने समेत अन्य आरोप लगाए। तीसरा आरोप कनिष्ठ सहायक अंजू गौतम पर लगाया।

**वायरल पत्रों का जिलाधिकारी ने संज्ञान लिया**

बताया 10 वर्ष से जिले में तैनात हैं। इन्हें विभाग की कोई जानकारी नहीं है।

किसी भी कार्य में रुचि नहीं लेती हैं। सोशल मीडिया पर वायरल तीनों पत्र में बाबुओं को जिले से हटाकर किसी अन्य जिले में तैनात करने का अनुरोध समाज कल्याण निदेशक से किया है। वायरल पत्रों का जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने संज्ञान लिया है। उन्होंने मामले की जांच कराने की बात भी कही।

# 23 जून को दिव्यांग उत्पीड़न के विरोध में दिव्यांग महागठबंधन पुलिस महानिदेशक कार्यालय का करेगा घेराव

कानपुर। दिव्यांग महागठबंधन की आज ऑनलाइन बैठक संपन्न हुई जिसमें दिव्यांग उत्पीड़न के मामलों में कार्यवाहीं न होने, थानों में दिव्यांगजन अधिनियम 2016 लागू न होने, दिव्यांग महागठबंधन के अध्यक्ष मनीष प्रसाद के साथ हुई मारपीट की रिपोर्ट दर्ज न होने व उत्पीड़न कर्ता द्वारा बराबर जांन माल कि धमकी देने सहित अन्य मांगों को लेकर 23 जून को पुलिस महानिदेशक उत्तर प्रदेश के कार्यालय का घेराव करने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया। साथ ही नौकरी रोजगार स्वास्थ शिक्षा सुरक्षा कि सौ फीसदी गारंटी के लिए शासन के अधिकारियों से मिलने का निर्णय लिया गया।महागठबंधन के महासचिव वीरेन्द्र कुमार ने कहा कि थाना आलमबाग की पुलिस द्वारा दिव्यांग महागठबंधन के साथ मारपीट, गाली गलौज करनें व गाड़ी में तोड़फोड़ करने वालों के खिलाफ कोई कार्यवाही न करने, अध्यक्ष के प्रार्थना पत्र पर रिपोर्ट दर्ज न दर्ज करने, पुलिस द्वारा उत्पीड़न कर्ताओं को संरक्षण देने का काम कर रही है।

## कानपुर में हिट एंड रन केस, तेज रफ्तार कार ने ई-रिक्शा को मारी टक्कर, दो घायल एक की मौत

कानपुर। कानपुर के ग्वालटोली थाना क्षेत्र में एक तेज रफ्तार कार ने ई-रिक्शा को टक्कर मार दी जिससे ई-रिक्शा चालक संजय कुमार की मौत हो गई और दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए कार सवार मौके से फरार हो गए पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर कार की पहचान की है और आरोपियों की तलाश जारी है । उत्तर प्रदेश के कानपुर में ग्वालटोली थाना क्षेत्र में तेज रफ्तार कार ने ई-रिक्शा को जोरदार टक्कर मार दी. कार की टक्कर से ई-रिक्शा पलट गया हादसे के दौरान ई-रिक्शा पर ड्राइवर समेत तीन लोग सवार थे. इस हादसे में तीनों लोग गंभीर रुप से घायल हो गए वहीं कार सवार मौके से भाग निकला हादसे के दौरान घटनास्थल पर चीख पुकार मच गई. राहगीरों ने घायलों की मदद की और इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया वहीं इस हादसे में ई-रिक्शा चालक संजय कुमार की मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक, ये हादसा ग्वालटोली थाना क्षेत्र के अंतर्गत हुआ. इस हादसे में ई-रिक्शा चालक की इलाज के दौरान अस्पताल में मौत हो गई, जबकि दो लोग गंभीर रुप से घायल हैं, जिनका इलाज चल रहा है. वहीं पुलिस इस मामले में जांच कर रही है पुलिस आरोपी और कार की पहचान करने में जुट गई है. सीसीटीवी फुटेज में देखा जा सकता है कि कार की जोरदार टक्कर के बाद ई-रिक्शा पलट गया और उसमें सवार लोग सड़क पर गिरकर घायल हो गई जबकि चालक ई-रिक्शा के नीचे दब गया वहीं सामने आ रही दूसरी कार ने खुद को बचाने की कोशिश की

घटना के बाद संजय कुमार के भाई मनजीत ने ग्वालटोली थाना पुलिस को तहरीर देते हुए दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है मनजीत ने बताया कि उनका भाई सुबह करीब 7 पुलिस कमिश्नर बंगले के सामने से एफएम कॉलोनी की ओर सवारी लेकर जा रहे थे बैरिकेट के पास ब्लैक रंग की एक बड़ी लग्जरी कार ने उनके ई-रिक्शा में तेज टक्कर मार दी, जिससे भाई संजय घायल हो गए ।

# सरकारी जमीन अतिक्रमण करने वालों पर एफआईआर

कानपुर। जिला उद्योग बुधु की बैठक शुक्रवार को आयोजित हुई। बैठक के दौरान सरकारी जमीन पर अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ एफआईआर के निर्देश जारी हुए। इसी तरह उपायुक्त उद्योग को हर महीने दूसरे व चौथे शुक्रवार को उद्यमियों से संवाद करने के निर्देश भी दिए। बैठक के दौरान उद्यमियों ने औद्योगिक क्षेत्रों में जलभराव, सफाई व ट्रिपिंग का मुद्दा भी उठाया।

जिलाधिकारी जेपी सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक में उद्यमियों ने समस्याएं बताईं। फीटा के महासचिव उमंग अग्रवाल ने कहा कि जिलास्तरीय बैठक में कई मुद्दों पर विस्तार से चर्चा नही हो पाती है। इसके लिए व्यवस्था होनी चाहिए। इस पर जिलाधिकारी ने उपयुक्त उद्योग को यह निर्देश दिया कि वे अब हर महीने दूसरे व चौथे शुक्रवार को उद्यमियों से संवाद करेंगे। इसी तरह उद्यमियों की ओर से कोपो इस्टेट के पदाधिकारियों ने को- ऑपरेटिव औद्योगिक क्षेत्र में उद्यमियों व श्रमिकों के लिए वैकल्पिक मार्ग नहर के किनारे की सड़कों को अतिक्रमण मुक्त कराने का मुद्दा उठाया।

इस पर यह भी बताया कि इसके लिए अधिशासी अभियंता सिंचाई विभाग को एफआईआर करानी थीञ लेकिन गोविंद नगर पुलिस ने पहले जांच करने को कहा था। इस पर जिलाधिकारी ने थाना प्रभारी गोविंद नगर को बैठक से ही एफआईआर दर्ज करने के लिए कहा। बैठक के दौरान उद्यमी मनोज बंका ने भौती क्षेत्र में पीएसआईटी तथा भौतिक भीमसेन मार्ग के मध्य नेशनल हाईवे पर अंडर पास बनाए जाने के संबंध में समस्या बताई। इस पर परियोजना निदेशक ने कहा कि वहां मौजूद स्थिति 4 किलोमीटर में 3 पास पहले से ही मौजूद है। साईट के सामने फुटओवर ब्रिज है, जबकि नियमत: दो पास के मध्य 2 किलोमीटर का अंतर होना चाहिए। इसलिए कोई भी नया अंडर पास नहीं बन सकता।

बैठक में इस प्रश्न को निक्षेपित किया गया। उधर बजरंगबली औद्योगिक क्षेत्र निजी क्षेत्र होने के कारण नगर निगम ने क्षेत्र के अंदर काम कराने से इनकार किया। मामला निक्षेपित कर दिया गया। बैठक में उद्यमियों ने पनकी औद्योगिक क्षेत्र साइट 4 में बंद पड़ी स्ट्रीट लाइट को ठीक करने और हाई मास्ट लगाने और क्षेत्र के मुख्य नालों की सफाई कराने का मुद्दा उठाया। इस पर क्षेत्रीय प्रबंधक यूपीसीडा द्वारा कहा गया की मुख्य बड़े नालों का सफाई का काम हो रहा है। इसके बाद छोटे नालों का काम कराया जाएगा। पूरे क्षेत्र में लाइट भी जल्द ही लगाए जाने का भी आश्वासन दिया गया। बैठक में शिव कुमार गुप्ता, आईआईए से ममता शुक्ला, आलोक अग्रवाल, दिनेश बरसिया, मनोज शुक्ला, सतीश प्रकाश, सुरेश गुप्ता, ज्ञानेंद्र अवस्थी सहित अन्य उद्यमी मौजूद रहे। बैठक में फीटा के महासचिव उमंग अग्रवाल ने व्यापार नगर, इस्पात नगर औद्योगिक क्षेत्र की दुर्दशा भी बताई। कहा कि क्षेत्र में सड़कों की मरम्मत, नालियों का निर्माण, झाड़ियां की सफाई बहुत जरूरी है। बगैर इन सहूलियत के वहां पर व्यापार करना मुश्किल है। इस पर जिलाधिकारी ने अपर नगर आयुक्त को प्रस्ताव बनाकर देने को कहा।

बैठक में सुरेश गुप्ता खादी ने भौती स्थित कानपुर गौशाला की ओर से पानी निकासी का विषय उठाया। इस पर निर्णय हुआ की गौशाला पानी निकासी में गोबर बहाने से रोकेगी और जल भराव की समस्या का हल एनएचएआई कर देगी।

# समाज सेवा,शिक्षा, व्यापार, धर्म और सामाजिक एकता आदि के क्षेत्रों में अनुकरणीय योगदान दिया:प्रदेश अध्यक्ष

कानपुर। कानपुर नगर के मीनाक्षी पैलेस, संजीव नगर-2 में अखिल भारतीय हमारा समाज पार्टी द्वारा समारोह का भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम का संचालन कृष्णावतार अग्रहरि ने किया। इस अवसर पर प्रदेश के कोने-कोने से आए वैश्य समाज के वरिष्ठ जनों एवं मातृशक्तियों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने समाज सेवा,शिक्षा, व्यापार, धर्म और सामाजिक एकता आदि के क्षेत्रों में अनुकरणीय योगदान दिया है। विशेष रूप से उन वैश्य परिवारों को भी सम्मानित किया गया जिन्होंने वैश्य समाज के दूसरे वैश्य उपवर्गों के बीच आपसी विवाह संबंध कर सामाजिक समरसता, एकता और समानता का संदेश दिया है। यह कदम पार्टी के उस उद्देश्य को दर्शाता है ऐसे परिवारों का सार्वजनिक मंच से सम्मान वैश्य समाज में जातीय वैश्य उपवर्गों के बीच भाईचारे और समरसता को मजबूत करने की दिशा में एक प्रेरणादायक पहल है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रदेश अध्यक्ष शैलेन्द्र गुप्ता ने कहा कि भारत में वैश्य समाज की जनसंख्या लगभग 33त्र है, लेकिन विभाजित उपवर्गों के चलते इसे राजनीतिक रूप से केवल 3त्र माना जाता है।पार्टी ने आगामी जिला पंचायत चुनावों में भागीदारी तथा 2027 विधानसभा चुनावों में अपने प्रत्याशी उतारने की घोषणा की है, ताकि वैश्य समाज को राजनीतिक नेतृत्व मिल सके। कार्यक्रम के समापन पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियों द्वारा वैश्य समाज की गौरवशाली परंपरा, एकता का संदेश और समर्पण भावना को रेखांकित किया गया। इस आयोजन ने वैश्य समाज के सामाजिक और राजनीतिक जागरण की एक नई दिशा दी है। आयोजन में युवाओं, महिलाओं, शिक्षाविदों, व्यापारियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं की उल्लेखनीय उपस्थिति ने यह सिद्ध कर दिया कि अखिल भारतीय हमारा समाज पार्टी एक समावेशी और सक्रिय राजनीतिक विकल्प के रूप में उभर रही है।

कार्यक्रम में, संजय गुप्ता (गुलहरे) ग्राम प्रधान धर्मपुर, अमित गुप्ता नरौली बेला (समाज सेवी), वैश्य सीमा अग्रहरि (समाज सेविका),अनुराधा गुप्ता (समाज सेविका), जय नारायण गुप्ता यज्ञसेनी, अजय अनमोल माहौरे वैश्य (किसान आंदोलन),रामचंद्र गुप्ता ओमर घाटमपुर,चीना गुप्ता जी घाटमपुर, कैलाश गुप्ता ओमर, (पूर्व चेयरमैन हमीरपुर),वैश्य रामशरण साहू वैश्य चेतना मंच, बांदा, राकेश जयसवाल अयोध्या, उमाशंकर कशौधन,सुल्तानपुर, अध्यक्ष कशौधन वैश्य समाज, उमाशंकर गुप्ता अयोध्यावासी वैश्य समाज, कानपुर, रामशंकर गुप्ता मुन्नू बाबू झिंझक राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष अखिल भारतीय वैश्य एकता परिषद, वैश्य किसन केसरवानी,कानपुर, ओ पी गुप्ता मद्धेशिया कुशीनगर, एडवोकेट चंद्रभाल गुप्ता पूर्व अध्यक्ष सीतापुर बार एसोशिएशन, विशाल गुप्ता जिला पंचायत सदस्य हरदोई, सिद्धार्थ काशीवार राष्ट्रीय अध्यक्ष वैश्य महा संघठन, वैश्य संजय चौदा राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय वैश्य महा परिषद, वैश्य आनंद वर्मा कानपुर आदि सम्मानित वैश्य बन्धु उपस्थित रहे।

# पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा

कानपुर। थाना शिवराजपुर कमिश्नरेट कानपुर नगर, पुलिस आयुक्त कमिश्नरेट कानपुर नगर द्वारा अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में पुलिस उपायुक्त पश्चिम कमिश्नरेट कानपुर नगर, अपर पुलिस उपायुक्त पश्चिम कमिश्नरेट कानपुर नगर व सहायक पुलिस आयुक्त महोदय बिल्हौर कमिश्नरेट कानपुर नगर द्वारा अपराध की रोकथाम एवं अपराधियों पर कड़ी कार्यवाही करने के सम्बन्ध में दिये गये दिशा-निर्देशों के क्रम में सोशल मीडिया पर भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के ऊपर अभद्र टिप्पणी की गयी जिससे आम-जनमानस में शान्ति व्यवस्था भंग होने की प्रभल सम्भावना को दृष्टिगत रखते हुए आरोपी यशवंत राव पुत्र सुरेश उर्फ अनिल उम्र करीब 20 वर्ष नि0-

बाकरगंज थाना शिवराजपुर कानपुर नगर को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय भेजा गया।थाना शिवराज यशवंत राव पुत्र सुरेश उर्फ अनिल उम्र करीब 20 वर्ष नि0-बाकरगंज थाना शिवराजपुर कानपुर नगर गिरफ्तार करने वाली टीम उ0नि0 नर सिंह थाना शिवराजपुर कमिश्नरेट कानपुर नगर,उ0नि0 श्री अभिषेक सिंह थाना शिवराजपुर कमिश्नरेट कानपुर नगर प्रभारी।

## पूर्व मुख्यमंत्री एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के हाथों को मजबूती देने के लिए जगह-जगह पीडीए पंचायत करना जरूरी:सौरभ सिंह

बीपीएस न्यूज

कानपुर। समाजवादी पार्टी की मुलायम सिंह यूथ ब्रिगेड की मासिक बैठक का आयोजन सपा ग्रामीण कार्यालय नवीन मार्केट में जिला अध्यक्ष सौरभ सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक के दौरान आकाश यादव को जिला सचिव मनोनीत किया गया। जिला अध्यक्ष ने पीडीए को लेकर सभी लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के हाथों को मजबूती देने के लिए जगह-जगह पीडीए पंचायत करना जरूरी है आगे कहा कि ग्रामीण की पांचो विधानसभाओं में जगह-जगह जाकर पीडीए पर चर्चा पंचायत लगाकर चाय के होटल पर यह संदेश देना है कि भाजपा केवल झूठे वादे कर कर सरकार बनती है भोली भाली जनता को

गुमराह करने का काम करती है ऐसी सरकार से जो केवल जनता को वोट बैंक मान कर चलती हो लेकिन जब विकास की यह जनता की भलाई की बात आती है तो भाजपा की सरकार केवल गुमराह कर देती वह अपने मूल जरूर से भटक जाते हैं। भाजपा की सरकार को 2027 में जड़ से उखाड़ कर फेंकने का काम करना इसमें हम सबको एक होना पड़ेगा धर्म जात से ऊपर उठकर सोचना पड़ेगा। बैठक के दौरान संचालन मुलायम सिंह यूथ ब्रिगेड महामंत्री परवेज मंसूरी ने किया। बैठक के दौरान सपा ग्रामीण मुलायम सिंह यूथ ब्रिगेड जिला अध्यक्ष सौरभ सिंह, महासचिव प्रवेश मंसूरी,जिला उपाध्यक्ष संजीत यादव संजीत आयुष सहगल राहुल यादव शिवम तिवारी राहुल ठाकुर अंश कटिहार त्रिवेदी आदर्श यादव प्रियांशु यादव अर्पण अवस्थी आलोक पाल आदित्य द्विवेदी शिवम कुमार अजय सिंह प्रफुल्ल शर्मा आदि लोग रहे।

# कन्वेंशन सेंटर के श्याम बिहारी मिश्रा के नाम पर करने की मांग

कानपुर के चुन्नीगंज में स्मार्ट सिटी योजना के अंतर्गत लगभग 95 करोड़ की लागत से बन रहे कन्वेंशन सेंटर का नाम चार बार के भाजपा सांसद एवं व्यापार मंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे ब्रह्मलीन श्याम बिहारी मिश्रा के नाम से कराए जाने को लेकर स्व0 श्याम बिहारी स्मृति समिति के सदस्य लगातार कानपुर शहर के जनप्रतिनिधियों से मिलकर समर्थन जुटा रहे है! समिति के इस अभियान को शहर के विधायकों द्वारा व्यापक समर्थन भी मिल रहा है !समिति सदस्यों ने रविवार 22 जून को बिठूर विधानसभा क्षेत्र से विधायक अभिजीत सिंह सांगा एवं कल्याणपुर क्षेत्र से विधायक नीलिमा कटियार जी से उनके आवास पर मिलकर अपना आग्रह निवेदन पत्र सौंपा !बिठूर विधायक अभिजीत सिंह सांगा ने समिति सदस्यों को आश्वासन दिया की मैं इस विषय को मुख्यमंत्री जी के संज्ञान में लाऊंगा,और आप समिति के प्रमुख सदस्यों को अपने साथ लेकर योगी जी से मिल कर ये विषय रखेंगे ! सांगा जी ने कहा कि श्याम बिहारी जी पार्टी के संघर्ष काल के नेता रहे हैं और यही नहीं वह व्यापारियों के पूरे देश में सर्वमान्य लोकप्रिय नेता है ,मैं व्यक्तिगत रूप से उनका बहुत सम्मान करता हूं !वही विधायक नीलिमा कटियार ने कहा कि श्याम बिहारी जी ने व्यापारियों के लिए बहुत संघर्ष किया,वह मेरे लिए एक अभिभावक है !शनिवार को समिति को आर्यनगर विधानसभा से विधायक अमिताभ बाजपेई ने भी अपना समर्थन पत्र प्रेषित कर दिया था !यहां यह भी बताते चले कि कन्वेंशन सेंटर का नामकरण श्याम बिहारी जी के नाम पर रखने हेतु कानपुर के सांसद रमेश अवस्थी ने एक प्रस्ताव नगर निगम को पूर्व में भी भेजा था जिस पर गोविंद नगर विधायक सुरेंद्र मैथानी ,किदवई नगर विधायक महेश त्रिवेदी ,पूर्व विधायक रघुनंदन भदोरिया ,पूर्व प्रत्याशी सुरेश अवस्थी के भी हस्ताक्षर थे !

## गाड़ी में लगी आग, चौकसी से बचाई जान

कानपुर। होशियारी से बची जान आप को बता दे कि गर्मी इस कदर हावी है कि छोटी सी गलती भी ले लेगी आप की जान। वैसे भी कानपुर में इस बार आग का कहर हर जगह देखा गया है। चाहें गोदाम हो, घर हो या गाड़ी पलक झपकते ही हो चुकी हैं स्वाहा। इसी तरह बड़ी-बड़ी आग की घटनाएं घट चुकी है। ऐसा ही एक मामला कानपुर से और निकल कर सामने आया है। जहां अपने घर से निजी काम के लिए दीपक नामक एक व्यक्ती पिपरगवां जा रहा था और तभी उसकी गाड़ी क्ष्78 0123 स्विफ्ट गाड़ी से अचानक धुआं उठा। कार चालक दीपक ने गाड़ी चेक की लेकिन नहीं समझ पाया की गाड़ी में क्या समस्या है। तभी अचानक गाड़ी का सायरन बजा और चालक दीपक नीचे उतरा और नीचे उतरते ही गाड़ी आग का गोला बन गई। जान तो बच गई लेकिन गाड़ी पूरी तरह जल कर खाक हो गई।

# एक और सोनमः दो मर्दों से प्यार, तीसरे से शादी, सुपारी देकर पति की कराई हत्या

परिवार में तनाव लगातार बढ़ता रहा और रिश्तों में दूरियां गहराने लगीं। बाहर से यह सब एक सामान्य पारिवारिक विवाद जैसा लगता था, लेकिन इसके पीछे एक खतरनाक साजिश पनप रही थी, जिसकी परिणति एक खौफनाक हत्या के रूप में हुई। यह मर्डर मिस्ट्री तब और भी चौंकाने वाली बन गई जब इसमें एक मासूम बच्चा अहम किरदार बनकर सामने आया और अपने पिता की हत्या की असली गवाह बन गया।

राजस्थान के अलवर जिले के खेरली इलाके में 7 जून की रात एक चौंकाने वाली घटना घटी, जिसने पूरे इलाके को हिला कर रख दिया। यह कहानी एक मर्डर मिस्ट्री की है, जो पहली नजर में बेहद उलझी हुई दिख रही थी, लेकिन सच्चाई तब सामने आई जब एक मासूम 9 साल के बच्चे ने सब कुछ अपनी आंखों से देखा और फिर साहस जुटाकर गवाही दी। यह मामला कुछ-कुछ सोनम और राजा रघुवंशी की कहानी जैसा है प्यार, धोखा और हत्या का मेल। दरअसल, महिला ने अपने पति की बेरहमी से हत्या कर दी थी। शुरुआत में यह एक सामान्य मर्डर केस की तरह लग रहा था, लेकिन कोई ठोस सुराग नहीं मिल पा रहा था। पुलिस ने पूरे मामले की तह तक जाने के लिए करीब 100 सीसीटीवी फुटेज खंगाले, लेकिन असली सुराग तब मिला जब उनके अपने बेटे ने सामने आकर पूरी घटना बताई।

बच्चे ने बताया कि उसने अपनी मां को पिता की हत्या करते हुए देखा था। उसकी गवाही ही पुलिस के लिए निर्णायक साबित हुई। बच्चे की निशानदेही और बयान के आधार पर महिला को गिरफ्तार कर लिया गया। इस घटना ने जहां एक मासूम को अपने पिता से छीना, वहीं मां को जेल की सलाखों के पीछे पहुंचा दिया। ये कहानी सिर्फ एक मर्डर केस नहीं, बल्कि रिश्तों की जटिलता, प्यार के नाम पर किए गए अपराध और मासूम की हिम्मत का प्रतीक बन गई है। 'अजब प्यार की गजब कहानी', जिसने पूरे राजस्थान को झकझोर कर रख दिया। सोनम और राजा रघुवंशी की सनसनीखेज कहानी की तरह ही राजस्थान के अलवर जिले में घटा अनीता राज और इंद्रमोहन जाटव का मामला भी रहस्यमयी मोड़ों और भावनाओं के भंवर से भरा हुआ है।

**पहले ससुरालवालों से बढ़े अनीता के तनाव फिर**

यह कहानी शुरू होती है साल 2010 से, जब अनीता राज की शादी भुसावर थाना क्षेत्र के एक पढ़े-लिखे युवक इंद्रमोहन जाटव से हिंदू रीति-रिवाज के अनुसार हुई। शादी के कुछ सालों तक सबकुछ सामान्य रहा। दोनों का एक बेटा भी हुआ। समय बीतने के साथ इंद्रमोहन और उसके परिवार ने अलवर के खेरली रेल इलाके में नया मकान बना लिया, जहां अनीता राज अपने पति और ससुराल वालों के साथ रहने लगी। यहीं से कहानी ने एक नया मोड़ लिया। अनीता का ससुराल वालों के साथ तनाव बढ़ने लगा। घरेलू कलह इस कदर बढ़ी कि अनीता ने अपने पति, सास और ससुर पर प्रताड़ना का मामला दर्ज करा दिया। हैरानी की बात यह थी कि इस सब के बावजूद इंद्रमोहन ने अपनी पत्नी का साथ नहीं छोड़ा और हर मोड़ पर उसका समर्थन करता रहा।

वीरू से मिलने के बाद पति इंद्रमोहन से अलग हो गई अनीता

अनीता राज और इंद्रमोहन की शादीशुदा जिंदगी की कहानी एक आम गृहस्थ जीवन की तरह शुरू हुई थी, लेकिन वक्त के साथ इसमें ऐसे मोड़ आए जिन्होंने इसे एक दिल दहला देने वाली मर्डर मिस्ट्री में बदल दिया। ससुराल वालों से अनबन के बाद इंद्रमोहन ने खेरली बाईपास पर एक मकान किराए पर ले लिया, जहां वह पत्नी अनीता और बेटे के साथ अलग रहने लगा। वह फल बेचकर गुज़ारा करता था और अपने छोटे से परिवार के साथ खुश रहने की कोशिश कर रहा था। लेकिन इस बीच अनीता की जिंदगी एक और राह पर चल पड़ी। उसकी मुलाकात वीरू जाटव नाम के व्यक्ति से हुई और दोनों के बीच अफेयर शुरू हो गया। यह रिश्ता धीरे-धीरे इतना गहरा हो गया कि अनीता ने अपने पति इंद्रमोहन से झगड़े शुरू कर दिए। उन झगड़ों की शिकायत तक अनीता ने थाने में दर्ज कराई थी।

**इंद्रमोहन के बाद वीरू और फिर काशी के साथ रहने लगी अनीता**

फिर एक दिन ऐसा भी आया जब अनीता इंद्रमोहन को पूरी तरह छोड़कर वीरू जाटव के साथ लिव-इन रिलेशन में रहने लगी। इस रिश्ते से उसे एक बेटा विशाल हुआ। लेकिन कहानी यहीं नहीं रुकी। अनीता ने वीरू को भी पीछे छोड़ दिया और तीसरे व्यक्ति से रिश्ता बना लिया। इस तीसरे रिश्ते से उसे एक और बेटा हुआ।

अब अनीता की जिंदगी में तीन पुरुष, दो अलग-अलग संबंधों से बच्चे, और ढेर सारे झूठ जुड़ चुके थे। रिश्तों में यह उलझन, लगातार झगड़े और कई प्रेम संबंधों की यह चक्रव्यूह आखिरकार इंद्रमोहन की जिंदगी पर भारी पड़ा। यह कहानी अब सिर्फ प्रेम और धोखे की नहीं रही बल्कि एक ऐसे हत्याकांड की बन गई जिसकी गुत्थी पुलिस, सीसीटीवी फुटेज और सबसे बढ़कर एक मासूम बच्चे की गवाही से सुलझी। एक आम आदमी की सीधी-सादी जिंदगी कैसे झूठ, लालच और बेवफाई के जाल में फंसकर एक खौफनाक अंत तक पहुंच गई। अनीता और इंद्रमोहन की यह कहानी इसका जीता-जागता सबूत है।

**बच्चे की गवाही से खुला मर्डर मिस्ट्री का पर्दाफाश**

अलवर के खेरली इलाके में सामने आई यह मर्डर मिस्ट्री किसी फिल्मी पटकथा से कम नहीं लगती एक औरत, उसके तीन प्रेमी, और अंत में एक मासूम बच्चे की गवाही, जिसने पूरी सच्चाई दुनिया के सामने ला दी। इंद्रमोहन की हत्या की गुत्थी जब पुलिस के लिए सुलझाना मुश्किल हो रही थी, तब वही बच्चा, जो सब कुछ अपनी आंखों से देख चुका था, सच का सबसे बड़ा गवाह बन गया। बच्चे ने पुलिस को बताया कि जिस रात उसके पिता की हत्या हुई, उस रात उसकी मां अनीता ने जानबूझकर घर का मेन गेट खुला छोड़ा था। आधी रात के करीब चार लोग घर में दाखिल हुए और उसके पिता वीरू की सोते वक्त गला दबाकर हत्या कर दी गई।

प्यार में अंधी मां का बेटा बना सच का आइना

बच्चे ने चार लोगों में से एक की पहचान भी की उसका नाम काशीराम प्रजापत था, जो अनीता का प्रेमी निकला। पुलिस जांच में यह भी सामने आया कि काशीराम, अनीता का न सिर्फ प्रेमी था बल्कि हत्या की साजिश में उसका मुख्य सहयोगी भी। जांच में कड़ियां जुड़ती गईं और जल्द ही पुलिस ने अनीता राज, काशीराम प्रजापत और एक अन्य आरोपी बृजेश जाटव को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ और कानूनी प्रक्रिया के बाद तीनों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। इस पूरे मामले में सबसे चौंकाने वाली और मार्मिक बात यह रही कि एक 9 साल के मासूम ने अपने पिता के कातिलों की पहचान कर, न्याय की लड़ाई में सबसे बड़ी भूमिका निभाई। एक मां ने प्रेम में अंधे होकर अपने पति की हत्या करवा दी, लेकिन उसका ही बेटा सच का आइना बन गया।

## प्रेमानंद महाराज ने देखिये क्या कहा,.. ? लव हो या अरेंज, क्यों टूट रहीं शादियां ?

जिस तरह आजकल शादियां लगातार टूट रही हैं, आए दिन शादी टूटने की खबरें सामने आ रहे हैं, इसी को लेकर एकांतिक वार्ता में प्रेमानंद महाराज से एक प्रश्न किया गया कि शादी होने के बाद भी आखिर रिश्ते क्यों टूट रहे हैं ? आईए जानते हैं प्रेमानंद महाराज ने क्या कहा ?

प्रेमानंद महाराज ने कहा के रिश्ते कैसे चलेंगे, आजकल बच्चों के चरित्र पवित्र नहीं हैं। मान लो अगर चार होटल के भोजन खाने की जुबान में आदत पड़ गई है तो घर की रसोई का भोजन अच्छा नहीं लगेगा। जब चार पुरुषों से मिलने की आदत पड़ गई है तो एक पति को स्वीकार करने की हिम्मत उसमें नहीं रह जाएगी। ऐसे ही जब चार लड़कियों से व्यभिचार करता है तो वह अपनी पत्नी से संतुष्ट नहीं रह पाएगा, उसे चार से व्यभिचार करना पड़ेगा क्योंकि उसने आदत बना ली है।

प्रेमानंद महाराज कहते हैं कि 100 में कोई दो-चार कन्याएं ऐसी होंगी जो अपना पवित्र जीवन रखकर किसी पुरुष को समर्पित होती होंगी। कैसे वह लड़की सच्ची बहू बनेगी जो चार लड़कों से मिल चुकी है, जो चार लड़कियों से मिल चुका हो, क्या वह सच्चा पति बन पाएगा ? जब मुगलों का आक्रमण हुआ तो पवित्रता के लिए जान दे दी लेकिन शरीर को छूने नहीं दिया। आज वही बच्चे ये सब क्या है ?

प्रेमानंद महाराज ने कहा कि अपने पति के लिए प्राण देने की भावना हमारे देश में रही है, चाहे हमारी जान चली जाए लेकिन मेरे पति का बाल बांका ना हो और आज पतियों के साथ ऐसा व्यवहार हो रहा है। अपनी पत्नी को प्राण माना गया है कहां हमारे देश की यह भाषाएं गईं ? जब बच्चे-बच्चियों ही पवित्र नहीं है, अगर किसी तरह से पवित्र मिल जाएं तो भगवान का वरदान समझिए। हम कहते हैं जो बचपने में जो हुआ, जो गलती हो गई लेकिन ब्याह होने के बाद उसे सुधर जाओ। बहुत विचित्र समय है।

## अखिलेश यादव ने कसा तंज, बीजेपी के लोग गाय का दूध नहीं पीते, उन्हें गोबर पसंद

अखिलेश यादव ने एक बार फिर से भाजपा सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि ये सरकार कह रही है कि एक्सप्रेस-वे के किनारे औद्योगिक क्षेत्र विकसित करेंगे। उन्होंने दावा किया कि समाजवादी पार्टी ने एक्सप्रेस-वे के किनारे किसानों के लिए बाज़ार बनाने शुरू किए थे। बीजेपी को किसानों के लिए बाज़ार बनाने पर ध्यान देना चाहिए। बाज़ार ऐसे होने चाहिए कि हर फसल वहीं खरीदी जाएज् गाय के दूध के प्लांट को क्यों बंद कर दिया ?ज् इन भाजपाइयों को दूध से बने उत्पादों से क्या लेना-देना ?

अखिलेश ने तंज सकते हुए कहा कि बीजेपी के लोग गाय का दूध नहीं पीतेज् उन्हें गोबर पसंद है। उन्हें गोबर उपहार में दिया जाए तो उन्हें अच्छा लगता है. अगर आप उन्हें गाय के दूध से बने उत्पाद जैसे घी या दही उपहार में देंगे तो वे नाराज़ हो जाएंगेज् उन्हें गोबर दिया जाए तो वे खुश हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि जितने भी कारोबार करने वाले लोग हैं, हम समाजवादियों से जो मदद और सहयोग हो सकती है हम उनकी करेंगे।

पूर्व सीएम ने कहा कि समाजवादी पार्टी स्कूलों के मर्जर के फैसले के खिलाफ है। अगर स्कूल घर से दूर होगा तो बच्चे कैसे पहुंचेंगे, खासकर बेटियां कैसे पहुंचेंगी। उन्होंने कहा कि मरीज़ आईसीयू में बिना बिजली के कैसे जीवित रहेंगे ? स्वास्थ्य विभाग में ट्रांसफर ही नहीं हो रहे। जाने का वक्त है सरकार का, इसीलिए सब सरकार के लोग इसी में लगे हैं कि ट्रांसफर पोस्टिंग से ही कुछ कमा ले। अखिलेश यादव ने राज्य की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार पर निशाना साधते हुए शनिवार को कहा कि इसके शासन में कानून व्यवस्था ध्वस्त हो चुकी है, अपराधी खुलेआम हत्याएं कर रहे हैं और राज्य में कोई कहीं भी सुरक्षित नहीं है। अखिलेश यादव अपने संसदीय क्षेत्र कन्नौज पहुंचे थे। उन्होंने पत्रकारों से बातचीत में उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार पर निशाना साधा और राज्य में कानून व्यवस्था को पूरी तरह ध्वस्त बताया। उन्होंने स्थानांतरण और पदस्थापना के नाम पर बसूली का आरोप भी लगाया।

## मचा हड़कंप-महिला ने दबंगई दिखाते हुए पेट्रोल पम्प कर्मचारी के सीने पर तानी पिस्तौल वीडियो वायरल

हरदोई जिले से एक चौंकाने वाला वीडियो सामने आया है, जो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। वीडियो में एक महिला को पेट्रोल पंप कर्मचारी के सीने पर रिवॉल्वर सटाकर धमकाते हुए देखा जा सकता है। बताया जा रहा है कि यह घटना 15 जून की है। वीडियो सामने आने के बाद स्थानीय लोगों और ऑनलाइन यूज़र्स में भारी आक्रोश फैल गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए युवती के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है, साथ ही उसके पास से रिवॉल्वर जब्त कर ली गई है। सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि एक युवती किसी बात पर पेट्रोल पंप कर्मचारी से बहस कर रही है। बहस अचानक हिंसक रूप ले लेती है और युवती अपनी रिवॉल्वर निकालकर कर्मचारी के सीने पर तान देती है। वहां मौजूद अन्य लोग इस घटना से घबरा जाते हैं, लेकिन युवती का रवैया आक्रामक बना रहता है।हरदोई जिले के थाना बिलग्राम क्षेत्र स्थित एक ष्ट्हत्न पंप पर रविवार को एक ऐसा वाकया सामने आया, जिसने सोशल मीडिया पर भी हलचल मचा दी। यहां गाड़ी में सवार एक परिवार से पंप कर्मचारी का मामूली विवाद अचानक इतना बढ़ गया कि एक युवती ने गाड़ी से रिवॉल्वर निकालकर कर्मचारी को धमका दिया। पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, यह वीडियो मिलते ही संबंधित थाने में एफआईआर दर्ज कर ली गई है। युवती से पूछताछ की जा रही है कि उसने हथियार क्यों निकाला और उसका लाइसेंस वैध है या नहीं। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि घटना के पीछे कोई पुराना विवाद तो नहीं है।

पंप कर्मचारी रजनीश कुमार ने पुलिस को दी गई तहरीर में बताया कि एक गाड़ी पंप पर गैस भरवाने के लिए रुकी थी। सुरक्षा मानकों के तहत उन्होंने सभी यात्रियों से गाड़ी से उतरने को कहा। इसी बात पर गाड़ी सवार लोग नाराज़ हो गए और अभद्रता करने लगे। इसी दौरान, सुरीश खान उर्फ अरीबा, जो एहसान खान की बेटी और मोहल्ला गिगियानी, थाना शाहाबाद की निवासी हैं, गाड़ी से अपनी लाइसेंसी रिवॉल्वर निकालकर पंपकर्मी को दिखाने लगीं। साथ ही उनके पिता एहसान खान और मां हुसनबानो भी कर्मचारी से विवाद करने लगे। रजनीश कुमार की तहरीर के आधार पर थाना बिलग्राम पुलिस ने तुरंत मुकदमा दर्ज कर लिया है। पुलिस ने विवाद में इस्तेमाल की गई रिवॉल्वर को भी जब्त कर लिया है। साथ ही मामले की विधिक जांच की जा रही है, जिसमें यह भी देखा जाएगा कि लाइसेंसी हथियार का इस तरह सार्वजनिक उपयोग नियमों का उल्लंघन तो नहीं है।

इस पूरी घटना का वीडियो भी सामने आया है, जिसमें युवती को रिवॉल्वर दिखाते हुए और परिवार के बाकी सदस्यों को बहस करते हुए देखा जा सकता है। वीडियो वायरल होने के बाद लोगों में कानून व्यवस्था को लेकर कई सवाल उठ रहे हैं। वीडियो वायरल होते ही सोशल मीडिया पर लोग कानून व्यवस्था पर सवाल उठाने लगे। एक यूज़र ने लिखा, 'अगर आम नागरिक इस तरह हथियार लेकर घूमेंगे तो सुरक्षा कैसे बचेगी ?' दूसरे ने कहा, 'युवती हो या युवक, कानून सबके लिए बराबर होना चाहिए।' हरदोई की यह घटना सिर्फ एक वायरल वीडियो नहीं, बल्कि लाइसेंसी हथियारों के दुरुपयोग और कानून के प्रति लापरवाही का गंभीर उदाहरण है। पुलिस की त्वरित कार्रवाई सराहनीय है, लेकिन यह सवाल भी उठता है कि आम लोगों के हाथ में हथियार होने पर क्या ऐसे और मामले सामने आ सकते हैं ? जांच पूरी होने तक इस मामले पर सभी की नजरें बनी हुई है।

## सोनम और राज को 13 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा, उठ सकता है कई राज से पर्दा

मेघालय के शिलांग में जिला सत्र न्यायालय ने सनसनीखेज राजा रघुवंशी हत्याकांड के मुख्य आरोपी सोनम रघुवंशी और राज कुशवाह को शनिवार (21 जून) को 13 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। हनीमून ट्रिप के दौरान संभावित पूर्व नियोजित साजिश के खुलासे के बाद इस मामले ने राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया है। सहायक लोक अभियोजक तुषार चंदा ने बताया कि अदालत ने दोनों आरोपियों को 13 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। पुलिस ने हिरासत की मांग नहीं की थी। जांच अधिकारी ने न्यायिक हिरासत की मांग की थी। अदालत ने 13 दिन की न्यायिक हिरासत मंजूर कर ली है।

राजा रघुवंशी के बड़े भाई सचिन रघुवंशी ने सोनम पर आरोप लगाया है कि उसने अपनी शुरुआती आठ दिन की हिरासत के दौरान पुलिस जांचकर्ताओं को गुमराह किया। इंदौर से बात करते हुए उन्होंने कथित हत्या की साजिश के पूरे दायरे को उजागर करने के लिए एक विस्तारित पुलिस रिमांड और गहन पूछताछ की मांग की। उन्होंने कहा कि उसने महत्वपूर्ण विवरण छिपाए। उन्होंने सभी आरोपियों को अधिक गहन जांच के लिए इंदौर स्थानांतरित करने की मांग की। सचिन ने सोनम के परिवार और करीबी सहयोगियों की नार्को जांच की मांग की और आरोप लगाया कि साजिश में उनकी भी संलिप्तता हो सकती है। उन्होंने कहा कि अकेले इतनी बड़ी साजिश रच पाना आसान नहीं है। उसके करीबी लोगों की गहराई से जांच होनी चाहिए।

राजा की दुखी मां उमा रघुवंशी पत्रकारों से बात करते हुए रो पड़ीं और सोनम से स्पष्टीकरण की मांग की।

## नितिन गडकरी का बड़ा ऐलान, अब 3,000 रुपये में मिलेगा एनुअल-पास

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने घोषणा की कि 15 अगस्त, 2025 को 3,000 रुपये की कीमत वाला एक नया फास्टैग-आधारित वार्षिक पास लॉन्च किया जाएगा, जिससे गैर-वाणिज्यिक वाहनों के लिए देश के राजमार्ग नेटवर्क पर निर्बाध यात्रा की सुविधा मिल सकेगी। बुधवार को घोषित इस पहल का उद्देश्य राष्ट्रीय राजमार्गों पर यात्रियों की सुविधा बढ़ाना है। एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर घोषणा को साझा करते हुए, गडकरी ने कहा कि परेशानी मुक्त राजमार्ग यात्रा की दिशा में एक परिवर्तनकारी कदम में, हम 3,000 रुपये की कीमत वाला फास्टैग-आधारित वार्षिक पास पेश कर रहे हैं, जो 15 अगस्त 2025 से प्रभावी होगा ।गडकरी ने कहा कि सक्रियण की तारीख से एक वर्ष के लिए या 200 यात्राओं तक- जो भी पहले हो- वैध- यह पास विशेष रूप से गैर-व्यावसायिक निजी वाहनों जैसे कार, जीप और वैन के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस पहल का उद्देश्य निजी वाहन मालिकों के लिए राष्ट्रीय राजमार्गों पर यात्रा को सुगम और अधिक किफ़ायती बनाना है। यह पास सड़क परिवहन प्रणालियों को डिजिटल बनाने और सुव्यवस्थित करने के सरकार के व्यापक प्रयासों का हिस्सा है, साथ ही यह राजमार्गों का लगातार उपयोग करने वालों को वित्तीय राहत और लचीलापन भी प्रदान करता है ।गडकरी ने आगे कहा कि उपयोगकर्ता जल्द ही राजमार्ग यात्रा ऐप पर उपलब्ध एक समर्पित लिंक का उपयोग करके वार्षिक पास को सक्रिय और नवीनीकृत कर सकेंगे।

## हज यात्रियों की फ्लाइट के पहियों से निकली चिंगारी, दिखा धुंआ, टला बड़ा हादसा

उत्तर प्रदेश के लखनऊ एयरपोर्ट पर रविवार 15 जून को बड़ा हादसा होने से बच गया है। लखनऊ एयरपोर्ट पर सऊदी अरब के जेद्दा से आई फ्लाइट लैंड हो रही थी, तभी एक हादसा होने से बच गया है। ये फ्लाइट जेद्दा से आई फ्लाइट स्क्क 3112 है, जो रविवार को लखनऊ एयरपोर्ट पर लैंड हो रही थी ।विमान के लैंड होने के दौरान ही पहिये से चिंगारी और धुंआ निकलने लगा। इस विमान में लगभग 250 हज यात्री यात्रा कर रहे थे। यह विमान सुबह 6.30 बजे लखनऊ पहुंचा। यहां विमान के रनवे पर उतरने के साथ ही उसके पहियों से चिंगारी निकलने लगी। एयरपोर्ट स्टाफ ने जैसे ही ये देखा तत्काल सतर्कता बरतते हुए इमरजेंसी स्थिति को देखते हुए कर्मचारियों ने यात्रियों को फ्लाइट से सकुशल बाहर निकाला।

यात्रियों को जैसे ही इस घटना के बारे में पता चला वो दहशत में आ गए। वहीं स्थिति को काबू करने के लिए विमान को पुश बैक कर टैक्सी वे पर लाया गया। वहां से यात्रियों को सुरक्षित निकाल लिया गया। इसके बाद लोगों को राहत मिली है। खासतौर से लोग इन दिनों अहमदाबाद में विमान हादसा हुआ था जो बेहद दर्दनाक था।

बता दें कि गुरुवार 12 जून 2025 को लंदन के गैटविक एयरपोर्ट जा रही एयर इंडिया की फ्लाइट एक बड़े हादसे का शिकार हुई थी। टेकऑफ के कुछ ही मिनट बाद विमान अहमदाबाद के एक मेडिकल कॉलेज परिसर में जा गिरा था। एयर इंडिया के मुताबिक, विमान में 242 लोग सवार थे, जिनमें से 241 की मौत हो गई. हादसे में केवल एक यात्री जिंदा बचा, जिसे गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया। यह हादसा सिर्फ विमान तक ही सीमित नहीं रहा। विमान गिरने से वहां मौजूद कई लोग इसकी चपेट में आ गए, जिससे मरने वालों की कुल संख्या 270 से अधिक हो गई है।

यह हादसा भारत के विमानन इतिहास की सबसे दर्दनाक और भयावह घटनाओं में से एक मानी जा रही है। सरकारी एजेंसियों ने जांच शुरू कर दी है और प्राथमिक रिपोर्ट के अनुसार, तकनीकी खराबी को हादसे की एक संभावित वजह माना जा रहा है। पूरा देश इस दुर्घटना से गहरे सदमे और शोक में है। इस हादसे में जान गंवाने वाले यात्रियों की अपनी-अपनी कहानी है, जो धीरे धीरे सबके सामने आ रही हैं।

**किस महीने कितने कैंसर मरीज आए**

जुलाई- 85- पुरुष-40 महिलाएं-45

अगस्त- 74- पुरुष-38 महिलाएं-37

सितंबर- 67- पुरुष-32 महिलाएं-35

# लंबे समय तक भूखे रहने से होने वाली एसिडिटी से बढ़ रहा कैंसर का खतरा

खाली पेट रहने वाली महिलाओं को एसिडिटी से पेट में अमाशय का कैंसर हो रहा है। एसकेएमसीएच स्थित होमी भाभा कैंसर अस्पताल में हर महीने 50 से 60 पेट के कैंसर के मरीज इलाज के लिए पहुंच रहे हैं। इसकी पुष्टि अस्पताल की सहायक अधीक्षक डॉ. तुलिका ने की। बताया कि जुलाई से सितंबर तक कैंसर अस्पताल में 226 पेट के कैंसर के मरीज पहुंच चुके हैं, जिनमें 116 महिलाएं हैं।

कैंसर अस्पताल के प्रभारी डॉ. रविकांत सिंह ने बताया कि अस्पताल में पेट के कैंसर के मरीजों का ऑपरेशन भी किया जा रहा है। कई मरीज़ों की कीमोथेरेपी भी चल रही है। अस्पताल के डॉक्टरों ने बताया कि लंबे समय एसिडिटी के कारण पेट में कैंसर मिल रहा है।

**30 से 40 वर्ष के लोग हो रहे शिकार =**

होमी भाभा कैंसर अस्पताल में कैंसर विशेषज्ञ डॉ. शांतनु पवार ने बताया कि अमाशय कैंसर के शिकार 30 से 40 वर्ष के युवा हो रहे हैं। इसका कारण उनकी जीवनशैली की अनियमितता और खानपान है। महिलाएं घर के कामकाज में अधिक समय तक खाली पेट रहती हैं, इसलिए उनके पेट में एसिडिटी बनती है। इससे महिलाएं ज्यादा इस बीमारी की शिकार हो रही हैं। उन्होंने बताया कि जनवरी से अक्टूबर तक पेट के कैंसर के 10 ऑपरेशन हमलोग कर चुके हैं। एसिडिटी से कैंसर होने वाले हर महीने करीब आठ मरीज अस्पताल पहुंच रहे हैं।

**एसिडिटी से कैसे होता है कैंसर =**

डॉ. शांतनु ने बताया कि लंबे समय तक पेट में एसिडिटी बनने से पेट के अंदर एचपाइलोरी इंफेक्शन होता है। यह डीएनए को डैमेज करता है। यही इंफेक्शन आगे जाकर पेट में कैंसर बनाने लगता है। एसिडिटी के कारण एसिड डिस्बैलेंस हो जाता है।

एसिडिटी के कारण अमाशय के बेस का तालमेल गड़बड़ हो जाता है, जिससे वहां कैंसर पनपने लगता है। लंबे समय की एसिडिटी से पेट में म्यूकस और डीएनए रीपेयर नहीं हो पाता है। डॉ. पवार ने बताया कि पेट में एसिडिटी बन रही है तो मरीज जाकर डॉक्टर से अपनी जांच कराएं। इसके लिए इंडोस्कोपी कराई जाती है। इंडोस्कोपी से पेट में इंफेक्शन का पता चलता है। उन्होंने बताया कि पेट के कैंसर के इलाज में ज्यादातर मरीज कीमोथेरेपी से ठीक हो रहे हैं।

**केमिकल वाले अचार बड़ा कारण =**

कैंसर अस्पताल के डॉक्टरों ने बताया कि पेट में एसिडिटी बनने और फिर कैंसर में बदलने में केमिकल युक्त खाना बड़ा कारण है। डॉक्टरों ने बताया कि बाजार में आज कई केमिकल वाले अचार मिलते हैं, इसे खाने के बाद पेट में एसिडिटी बनने लगती है। शराब से भी दूर रहना जरूरी है।

# डेंगू-मलेरिया के मच्छर रहेंगे दूर

## बस इस तरह इस्तेमाल करें ये 5 एसेंशियल ऑयल

लेकिन ये सभी प्रोडक्ट्स सेहत पर बुरा असर डाल सकते हैं। ऐसे में आइए जान लेते हैं कुछ ऐसे एसेंशियल ऑयल के बारे में , जिनकी मदद से आप खुद को मच्छरों से बिना किसी साइड इफेक्ट्स के दूर रख सकते हैं।

समय रहते अगर मच्छरों से बचाव न किया जाए तो ये कई गंभीर बीमारियों जैसे डेंगू, चिकनगुनिया और मलेरिया का खतरा बढ़ा देते हैं। यूं तो मच्छरों को घर से दूर रखने के लिए बाजार में कई तरह के एंटी-मॉस्कीटो कॉइल्स सहित कई तरह के प्रोडक्ट्स मौजूद हैं। लेकिन ये सभी प्रोडक्ट्स सेहत पर बुरा असर डाल सकते हैं। ऐसे में आइए जान लेते हैं कुछ ऐसे एसेंशियल ऑयल के बारे में , जिनकी मदद से आप खुद को मच्छरों से बिना किसी साइड इफेक्ट्स के दूर रख सकते हैं।

**तुलसी का तेल**-तुलसी का तेल मच्छरों को भगाने के लिए बेहद प्रभावी उपाय है। इसमें कीट-प्रतिरोधक क्षमता होती है जिसके इस्तेमाल के बाद मच्छर आपसे दूर रहते हैं।

**लेमनग्रास ऑयल**- मच्छर भगाने के लिए लेमनग्रास ऑयल का इस्तेमाल लंबे समय से किया जाता रहा है। इसका इस्तेमाल करने पर कुछ घंटों तक मच्छर आपसे दूर रहते हैं।

**लैवंडर ऑयल**- मच्छर दूर रखने के लिए लैवंडर ऑयल को अपनी त्वचा पर लगाकर आराम से सैर या सोने के लिए जा सकते हैं। आपको मच्छर नहीं काटेंगे साथ ही इसकी खुशबू आपके मन को भी शांत करेगी।

पुदीना स्प्रे-मच्छरों को भगाने के लिए नारियल के तेल में पुदीना मिलाकर एक स्प्रे बोटल में भर लें। पुदीने का तेल मच्छरों को भगाने में बेहद असरदार साबित होता है।

**नीलगिरी का तेल**-मच्छरों को भगाने के लिए नींबू और नीलगिरी के तेल को बराबर मात्रा में मिलाएं। इसके अलावा इस तेल में जैतून, नार ?यिल, ऐवोकाडो का तेल मिलाकर इसे एक स्प्रे वाली शीशी में भरकर रख लें। अब इसे अपने ऊपर स्प्रे कर लें ताकि मच्छर आपसे दूर रहें।

# बच्चों की ओरल हेल्थ का ख्याल रखने के लिए हर पेरेंट को पता होनी चाहिए ये बातें

**हर पेरेंट बच्चों का ध्यान रखते हैं लेकिन कभी-कभी ऐसा होता है कि उनके खाने-पीने और पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान देते-देते हम कई छोटी-छोटी चीजें भूल जाते हैं। असल में ये बातें उनकी हेल्थ से जुड़ीं होती हैं। ओरल हेल्थ भी एक ऐसा ही टॉपिक है, जो बच्चों की ओवर हेल्थ से जुड़ा होता है। इसके बारे में हर पेरेंट को पता होना चाहिए और बच्चों की ओरल हेल्थ का ज़्याल रखने की जिज़्मेदारी पेरेंट की होती है। ऐसे में आपको कुछ बातों पर ध्यान देना चाहिए।**

**सुबह उठते ही ब्रश करना**

अपने बच्चों को सिखाएं कि उन्हें उठने के बाद फ्रेश होना है और ब्रश करना बहुत जरूरी है। बिना ब्रश किए बच्चों को कुछ भी खाने के लिए न दें। बिना ब्रश किए खाना खाने से उनकी ओरल हेल्थ खराब होती है।

**रात में ब्रश करके सोना**

सुबह उठने पर ब्रश करना बहुत जरूरी है। इससे अलावा अपने बच्चों को कहें कि रात को खाना खाने के बाद ब्रश करके सोना चाहिए। इससे बच्चों की ओरल हेल्थ ठीक रहेगी और उनके दांत भी मजबूत होंगे।

**बच्चों को ज्यादा पानी पिलाएं**

बड़ों की तरह बच्चों का पानी पीना भी बहुत जरूरी है इसलिए बच्चों को पानी पीने की आदत डालें। पानी पीने से बच्चों का डाइजेशन बेहतर होता है। पेट सही रहने से बच्चों की ओरल हेल्थ भी अच्छी रहेगी।

**चॉकलेट और शुगर का कम इस्तेमाल**

बच्चों को ऐसी चीजें न खाने दें, जिनसे कि उनकी ओरल हेल्थ खराब हो। चॉकलेट, शुगर, कैंडी से परहेज करने को कहें। बच्चों को ज्यादा फ्राइड फूड भी नहीं देना चाहिए। इससे बच्चों के दांत खराब होते हैं।

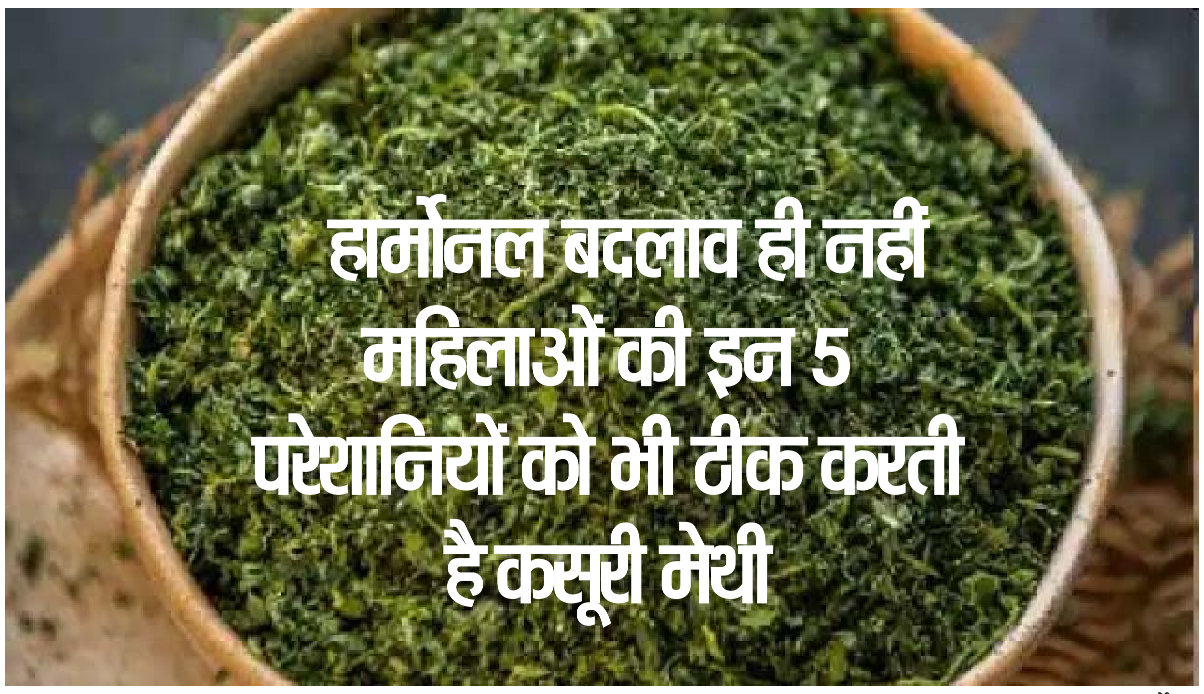

# हार्मोनल बदलाव ही नहीं महिलाओं की इन 5 परेशानियों को भी ठीक करती है कसूरी मेथी

आयुर्वेद में कसूरी मेथी को औषधि माना गया है। इसका उपयोग कई तरह के रोगों को ठीक करने के लिए किया जाता है। आइए जानते हैं कसूरी मेथी का सेवन करने से महिलाओं कोहार्मोनल बदलाव ही नहीं महिलाओं की इन 5 परेशानियों को भी ठीक करती है कसूरी मेथी, ये होते हैं फायदे

खाने का स्वाद बढ़ाना हो या खुशबू, कसूरी मेथी का इस्तेमाल हर रसोई में किया जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कसूरी मेथी न सिर्फ खाने का स्वाद अच्छा करती है बल्कि सेहत से जुड़ी कई समस्याओं को भी ठीक करने में मदद करती हैं। आयुर्वेद में कसूरी मेथी को औषधि माना गया है। इसका उपयोग कई तरह के रोगों को ठीक करने के लिए किया जाता है। आइए जानते हैं कसूरी मेथी का सेवन करने से महिलाओं की कौन सी 5 समस्याएं दूर होती हैं।

**प्रेग्नेंसी के बाद भी फायदेमंद-**

ऐसी महिलाएं जो बच्चों को स्तनपान करवाती हैं उन्हें कसूरी मेथी का सेवन जरूर करना चाहिए। कसूरी मेथी में पाए जाने वाले तत्व ब्रेस्ट मिल्क को बढ़ाने में मदद करते हैं।

**एनीमिया से करें बचाव-**

भारत में ज्यादातर महिलाएं एनीमिया की शिकार हैं। ऐसी महिलाओं के लिए कसूरी मेथी का सेवन बेहद फायदेमंद होता है। कसूरी मेथी में काफी मात्रा में आयरन मौजूद होता है, जो शरीर में हीमोग्लोबिन के स्तर को बढ़ाता है। शरीर में खून की कमी होने पर अपनी डाइट में कसूरी मेथी को जरूर शामिल करें।

**इंफेक्शन से करें बचाव-**

पेट के इंफेक्शन से बचाव करने के साथ कसूरी मेथी का सेवन हार्ट, गैस्ट्रिक और आंतों की समस् ?याएं को भी दूर रखने में मदद करता है। अगर किसी महिला को पेट से जुड़ी कोई समस्या है तो वो कसूरी मेथी की पत्तियों को सुखाकर उसका पाउडर बना लें। इस पाउडर में नींबू की कुछ बूंदें डालकर इसे उबले हुए पानी के साथ लें।

**हार्मोनल बदलाव करे ठीक-**

महिलाओं की बॉडी में जीवनभर हार्मोनल बदलाव होते रहते हैं। जिसके पीछे पीरियड्स, गर्भावस्था, मेनोपॉज आदि कारण जिम्मेदार होते हैं। ऐसे में कसूरी मेथी का सेवन हार्मोनल बदलाव को कंट्रोल करके उससे होने वाली परेशानियों को कम करने में मदद करता है।

**डायबिटीज करें कंट्रोल-**

खानपान में गड़बड़ी का सीधा असर आपके ब्लड शुगर पर पड़ने लगता है। इसे नियंत्रित करने के लिए मेथी का प्रयोग करें। मेथी में एंटी-डायबिटिक गुण होते हैं, जो ब ?लड ग्लूकोज के स्तर को नियंत्रित करते हैं। यह टाइप-2 डायबिटीज होने की संभावना को भी कम करता है।

# बड़ों की बातें छुपकर सुनने वाले बच्चों को क्यों नहीं करना चाहिए एंटरटेंन

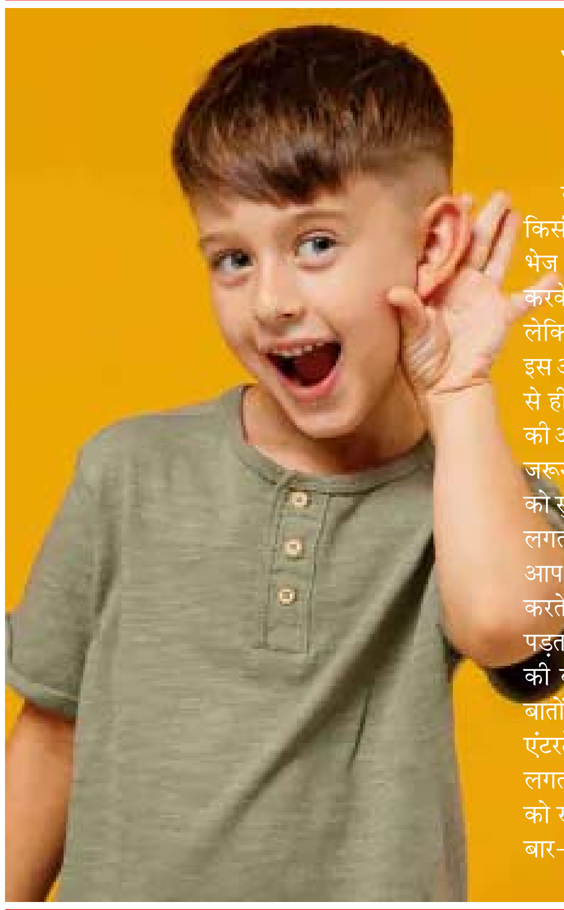

कई पेरेंट की आदत होती है कि वे किसी की बातें सुनने के लिए बच्चों को भेज देते हैं। उन्हें लगता है कि ऐसा करके वे अपनी सावधानी रख रहे हैं लेकिन क्या आप जानते हैं कि पेरेंट की इस आदत की वजह बच्चे को कम उम्र से ही फालतू बातों और गॉसिप करने की आदत लग जाती हैं। फिर वह अपने जरूरी काम छोड़कर लोगों की बातों को सुनना ही अपना पहला काम मानने लगता है। आइए, जानते हैं कि जब आप बच्चों की इस आदत को एंटरटेंन करते हैं, तो इसका उन पर क्या असर पड़ता है? आपक बच्चा अगर दूसरों की बात बताता है और आप उसकी बातों को सुनकर उसे डांटने की बजाय एंटरटेंन करने लगते हैं, तो बच्चे को लगता है कि इस बात से वह अपने पेरेंट को खुश कर सकता है। ऐसे में बच्चा बार-बार ऐसा करता है।

बच्चे को लगता है कि यह दुनिया का सबसे आसान काम है और वह इसे बड़ी आसानी से कर सकता है। ऐसे में वह किसी भी बात की परवाह किए बिना मुश्किल में पड़कर भी लोगों की बातें सुनने लगता है। जैसे, बातें सुनने के लिए बच्चा पूरे दिन खड़ा भी रह सकता है। बच्चे का ध्यान पढ़ाई पर नहीं लगता। उसे लगता है कि पढ़ाई से ज्यादा आसान काम बातों को सुनना है। इस कारण से वह सुनी हुई बातों को मन ही मन सोचने लग जाता है और उसका फोकस पढ़ाई पर से हट जाता है।

गॉसिप का कोई मकसद नहीं होता। कई लोग बस पल दो पल के मजे के लिए ऐसा करते हैं, तो कुछ लोग टाइम पास करने के लिए दूसरों की लाइफ में झांकते हैं। बच्चे भी अगर यह आदत पकड़ लेते हैं, तो उनका व्यक्तित्व और मेंटल हेल्थ दोनों खराब होती है।

# व्यस्कों को ही नहीं छोटे बच्चों को भी होती है स्लीप डिसऑर्डर की समस्या

आपने आजतक व्यस्कों के बीच स्लीप डिसऑर्डर के कई किस्से सुने होंगे। लेकिन क्या आप जानते हैं अनिद्रा की समस्या सिर्फ बड़े लोगों को ही नहीं बल्कि बच्चों को भी परेशान करती है। बच्चों में नींद न आने की समस्या 6 महीने से किशोरावस्था तक हो सकती है। हालांकि बच्चों में इस समस्या का पता लगाना थोड़ा मुश्किल होता है। लेकिन नींद न आने की वजह से चिड़चिड़ापन, गुस्सा आना, खाना ठीक से न खाना, पेट संबंधित समस्याएं, सुस्ती जैसी प्रॉब्लम बच्चों के बीच आम हो जाती है। आइए जानते हैं बच्चों में स्लीप डिसऑर्डर होने पर दिखाई देते हैं कौन से लक्षण और क्या है इससे बचाव के उपाय। -कोल्ड ड्रिंक, एनर्जी ड्रिंक जैसी चीजों में कैफीन की मात्रा बहुत ज्यादा पाई जाती है। अगर छोटा बच्चा इसका सेवन करता है तो नींद न आने की समस्या हो सकती है।

-कई बार आसपास के वातावरण गर्मी या सर्दी के कारण भी बच्चों को नींद न आने की समस्या हो सकती है। बच्चों को सुलाते वक्त ध्यान दें कि आसपास बिल्कुल शांत माहौल हो। जिस कमरे में बच्चा सो रहा है वहां का तापमान सामान्य हों।

## बच्चों में स्लीप डिसऑर्डर होने पर दिखाई देते हैं ये लक्षण -

- देर रात सोना और सुबह जल्दी उठ जाना।
- रात में बार-बार नींद से जगाना और फिर दोबारा सोने में परेशानी महसूस करना।
दिन के समय में 10 से 15 मिनट की कई झपकियां लेना।
- खेलने-कूदने की जगह शांत बैठे रहना।
नियमित तौर पर खाने की खुराक का कम होना।
- हर समय सुस्ती महसूस होना।
- छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा आना और चिड़चिड़ापन महसूस होना।

**बच्चों को नींद न आने का कारण -**

- कई बार नींद न आने की समस्या बुरे सपने के कारण हो सकती है। इससे बचने के लिए सोने से पहले या पूरा दिन आपका बच्चा मोबाइल और टीवी पर क्या देख रहा है इस पर ध्यान दें।

# शिशु की मजबूत हड्डियों के लिए इन 5 तेलों से करें मालिश

शिशु को एक्टिव बनाए रखने के साथ मजबूत हड्डियों के लिए भी मालिश बेहद जरूरी है। आजकल बाजार में शिशु की मालिश के लिए कई तरह के तेल उपलब्ध हैं। जिसमें से कई तो केमिकल्स और टॉक्सिन्स से भरे हुए होते हैं। ये तेल बच्चे की स्किन को नुकसान पहुंचा सकते है।

**बादाम का तेल**-शिशु की मालिश नियमित रूप से इस तेल से करने से उसकी रंगत में सुधार होता है और बाल भी काले और घने आते हैं। बादाम के तेल में प्रचुर मात्रा में विटामिन ई पाया जाता है, जो शिशु की हड्डियों को मजबूती देने के साथ मांसपेशियों को भी मजबूत बनाता है।

**नारियल तेल**-नारियल तेल में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण मौजूद होते हैं, जो शिशु के शरीर के दर्द और अकड़न को दूर करने के साथ त्वचा को पोषण भी देते हैं। ये तेल इस्तेमाल करने से शिशु के शरीर की हड्डियां मजबूत होती हैं।

**जैतून का तेल**-जैतून के तेल से शिशु की मालिश करने से शिशु की हड्डियां मजबूत बनने के साथ शरीर का विकास ठीक ढंग से होता है। ये तेल एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होता है, जो शिशु के शरीर को एक्टिव बनाए रखने में भी मदद करता है।

**सरसों का तेल**-सरसों का तेल बच्चे की मांसपेशियों और हड्डियों को मजबूत बनाता है। इस तेल से मालिश करने से बच्चे के शरीर को गर्माहट भी मिलती है।

तिल का तेल-

ये तेल शिशु की स्किन को पोषण देने के साथ ब्लड सर्कुलेशन को बेहतर बनाने और इंफेक्शन से बचाव भी करता है। तिल के तेल में विटामिन ई, विटामिन बी और एंटीऑक्सीडेंट्स भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं जो त्वचा की रंगत निखारने में भी मदद करते हैं।

# नगर निगम मुख्यालय स्थित सभागार कक्ष में पार्षद वेलफेयर एसोसिएशन ने की बैठक

बीपीएस न्यूज

कानपुर। नगर निगम मुख्यालय स्थित सभागार कक्ष में पार्षद वेलफेयर एसोसिएशन संरक्षक अमित पाण्डेय, अध्यक्ष नवीन पण्डित एवं नगर आयुक्त सुधीर कुमार के साथ सम्भव पोर्टल पर नगर विकास मंत्री अरविन्द कुमार शर्मा एवं प्रमुख सचिव, नगर विकास विभाग अमृत अभिजात से वार्ता हुई, जिस पर नगर विकास मंत्री जल्द ही शासन स्तर पर सम्बन्धित प्रकरणों निर्णय लिये जाने आश्वासन दिया गया। नगर आयुक्त सुधीर कुमार द्वारा नगर निगम की प्रकरण पर अपना पक्ष रखा गया। तत्सम्बन्ध में उल्लेखनीय है कि दिनांक 16.06.2025 को पार्षद वेलफेयर ऐसासिएशन के संरक्षक अमित पाण्डेय, अध्यक्ष नवीन पण्डित के साथ मा0 मंत्री नगर विकास अरविन्द कुमार शर्मा जी के लखनऊ स्थित आवास पर वार्ता हुई थी, जिसमें तीन पत्र दिये गये थे, पत्रों में निम्न प्रकरणों का उल्लेख किया गया था कानपुर नगर निगम एवं कानपुर विकास प्राधिकरण के विवाद आयुक्त कानपुर मण्डल को अग्रसारित किये जाते है, आयुक्त, कानपुर मण्डल द्वारा कानपुर विकास प्राधिकरण के पक्ष में निर्णय लिया जाता है, क्यों कि आयुक्त, कानुपर मण्डल कानपुर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष है। आयुक्त कानपुर मण्डल, कानुपर के स्थान पर किसी अन्य अधिकारी को कानपुर नगर निगम एवं कानपुर विकास प्राधिकरण के विवादों पर नियुक्त किया जाये।नगर निगम की सीवेज फार्म की 1200 एकड़ भूमि है, उक्त भूमि नगर निगम की है, फिर भी कानपुर विकास प्राधिकरण द्वारा अपनी बोर्ड बैठक में दो परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान कर दी गयी है। चूँकि उक्त भूमि सीवेज फार्म है और हाई कोर्ट इलाहाबाद के पारित आदेश में भूमि का प्रयोग बदला नहीं जा सकता है, किन्तु हाई कोर्ट, इलाहाबाद का निर्णय न मानते हुए कानपुर विकास प्राधिकरण द्वारा मनमानी करते हुए परियोजनाओं का लागू किया जा रहा है। स्मार्ट सिटी के प्रोजेक्ट में भी भूमि सम्बन्धी विवाद आये थे। कानपुर विकास प्राधिकरण के पास ग्राम समाज एवं इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्ट की भूमि का अधिकार दे दिया गया है, ये व्यवस्था सिर्फ कानपुर में है, अन्य 16 नगर निगमों में नहीं। मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र के शहर आगे बढ़ते जा रहे है पूर्व में कानपुर महानगर उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा महानगर था, किन्तु कानपुर अब काफी पिछड़ गया है, कानपुर नगर निगम को अधिकार न होने के कारण हम पिछड़ते जा रहे है।

# बिजली कटौती के खिलाफ आम आदमी पार्टी का हल्ला बोल

बीपीएस न्यूज

कानपुर। बिजली कटौती के खिलाफ आम आदमी पार्टी का हल्ला बोल, योगी सरकार के खिलाफ प्रदेशव्यापी विरोध प्रदर्शन। प्रदेश प्रभारी सांसद संजय सिंह के आह्वाहन पर कार्यकर्ताओं ने बिजली कटौती के खिलाफ किया प्रदर्शन।जिलाध्यक्ष अनुज शुक्ला ने विरोध प्रदर्शन के दौरान कहा कि प्रदेश में लगातार महंगी हो रही बिजली और उस पर घंटों बिजली की कटौती की मार झेल रही प्रदेश की जनता, सरकार से पूरी तरह त्रस्त हो चुकी है, लेकिन उनकी कहीं कोई सुनवाई नहीं हो रही है।

बदहाल विद्युत व्यवस्था और घंटों पॉवर कट के मुद्दे पर आम आदमी पार्टी द्वारा योगी सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर जिलाधिकारी कानपुर को ज्ञापन दिया।विरोध प्रदर्शन में प्रमुख रूप से आशुतोष सेंगर (प्रभारी), अनुज शुक्ला (जिलाध्यक्ष), संजय झा (मीडिया प्रभारी), जितेन्द्र वर्मा, कृष्णा प्रजापति, वसीमुद्दीन, मो0 शहीद प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश झा, योगेश दीक्षित, जावेद मंसूरी, कृष्णा चकित, गुंजन पाण्डेय, देवेश शुक्ला, सरिता द्विवेदी एवं कई लोग शामिल हुए।

# एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य थीम पर 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

बीपीएस न्यूज

कानपुर । 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का भव्य आयोजन आज ग्रीन पार्क स्टेडियम में किया गया।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश विधान सभा अध्यक्ष सतीश महाना जी रहे, जिन्होंने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। इसके पश्चात उन्होंने तिरंगे रंग के गुब्बारों को आसमान में उड़ाकर एकता, स्वास्थ्य और शांति का संदेश दिया। इस अवसर पर उपस्थित हजारों योग साधकों ने उत्साहपूर्वक योगाभ्यास किया।

कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा विशाखापट्टनम से दिए गए संबोधन का सजीव प्रसारण स्क्ष्वष्ठ स्क्रीन के माध्यम से उपस्थित जनसमूह ने देखा और सुना।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित भव्य कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने अपने ओजस्वी संबोधन में कहा कि भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों से 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में पूरे विश्व में मनाया जा रहा है। यह दिवस अब एक राष्ट्रीय पर्व जैसा बन गया है, जिसे देश-विदेश में उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के सबका साथ, सबका विकास के मंत्र को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य योग दिवस के माध्यम से भी हो रहा है। उन्होंने याद दिलाया कि स्वच्छ भारत और स्वस्थ भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए मोदी जी ने स्वयं हाथ में झाड़ू लेकर स्वच्छता का संदेश दिया। महाना ने कहा कि स्वस्थ व्यक्ति ही एक बेहतर समाज और राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे सकता है।योग के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि योग न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि मानसिक और बौद्धिक विकास का भी माध्यम है। उन्होंने कहा कि योग अनुशासन सिखाता है और जीवन में संतुलन लाता है। उन्होंने आयुष विभाग और जिला प्रशासन द्वारा शहर के विभिन्न स्थानों पर आयोजित योग कार्यक्रमों की सराहना की।

उन्होंने सभी नागरिकों को दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सबका साथ, सबका विकास और सबके प्रयास से ही भारत पुनः विश्वगुरु के स्थान को प्राप्त करेगा — यही हमारे पूर्वजों और गुरुओं की परिकल्पना थी, जिसे प्रधानमंत्री मोदी जी साकार करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।

जिलाधिकारी जितेन्द्र प्रताप सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि ग्रीन पार्क स्टेडियम में जनपद स्तरीय वृहद कार्यक्रम का आयोजन किया गया, इसके साथ ही योग दिवस का कार्यक्रम पार्कों, विभिन्न सरकारी व निजी संस्थाओं, विकास खंडों, ग्राम पंचायतों इत्यादि स्थानों पर आयोजित किया गया। जिसमें लोगो द्वारा बढ-चढ कर प्रतिभाग किया गया।उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृत परम्परा से जुड़ा हुआ है योगाभ्यास, इसके फायदे के सम्बन्ध में हर एक व्यक्ति तक जानकारी पहुंचाने के लिये, योगाभ्यास को अपनी दिनचर्या बनाने के लिये यह कार्यक्रम एक अच्छा मैसेज होगा, लोग इससे प्रेरणा लेकर योगाभ्यास प्रारम्भ करेंगे। उन्होंने कहा कि लोग योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं, लोगों को प्रेरित करने के लिए प्रत्येक वर्ष एक बड़े स्तर पर योग का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिससे लोग प्रेरित होकर प्रतिदिन योगाभ्यास करें और स्वस्थ रहें।

कार्यक्रम में सांसद रमेश अवस्थी, विधायक सुरेन्द्र मैथानी, विधायक सरोज कुरील, एमएलसी अरुण पाठक, पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार , मुख्य विकास अधिकारी समेत और संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

# न्यायालय के आदेशों को दरकिनार कर केडीए ने की कार्रवाई, पीड़ित ने लगाई मदद की गुहार

बीपीएस न्यूज

कानपुर। कानपुर विकास प्राधिकरण के द्वारा मुखर्जी विहार में अवैधानिक रूप से बाउंड्री वाल को अधिकारियों के निर्देश पर गिरा दिया गया। पीड़ित अरुणेंद्र सिंह ने न्यायलय के आदेशों को दिखाते हुए मदद की गुहार लगाते हुए कहा कि प्लॉट 11 एचआईजी मुखर्जी विहार में उनकी संपत्ति को केडीए के उच्च अधिकारियों के निर्देश पर गिरा दिया गया।जबकि न्यायालय ने 21 फरवरी 2025 को प्रार्थी के हक फैसला देते हुए आदेश दिया कि प्रार्थीगणों की संपत्ति पर केडीए हस्तक्षेप ना करे। आरोप लगाते हुए अरुणेंद्र सिंह ने कहा कि नाजायज वसूली के उद्देश्य से 18 जून को बिना सूचना दिए ही कर्मचारियों को भेज उनकी बाउंड्री वाल को जबरन गिरा दिया गया। नम आंखों से पीड़ित ने आलाधिकारियों से गुहार लगाते हुए न्याय की मांग की।

## युवक ने सोशल मीडिया पर भगवान श्रीराम के ऊपर की अभद्र टिप्पणी, पुलिस ने आरोपी को भेजा जेल

कानपुर। सोशल मीडिया पर भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के ऊपर अभद्र टिप्पणी की गयी। आम-जनमानस में शान्ति व्यवस्था भंग होने की सम्भावना को ध्यान रखते हुए पुलिस ने आरोपी यशवंत राव पुत्र सुरेश उर्फ अनिल उम्र करीब 20 वर्ष नि0- बाकरगंज थाना शिवराजपुर कानपुर नगर को गिरफ्तार कर न्यायालय भेजा गया।

## कानपुर नगर के नये जिला सूचना अधिकारी शांतनु कुमार श्रीवास्तव ने कार्यभार किया ग्रहण

कानपुर। जिला सूचना अधिकारी शांतनु कुमार श्रीवास्तव ने जिला सूचना कार्यालय, कानपुर नगर का कार्यभार ग्रहण किया। इसके पूर्व श्री शांतनु जिला सूचना अधिकारी देवरिया के पद पर भी कार्यरत रहे। वे 2018 बैच के पीसीएस ऑफीसर है। वे मूलतः गोरखपुर के निवासी हैं। बता दें कि श्री शांतनु बतौर समीक्षा अधिकारी, सचिवालय लखनऊ व नगर निगम कानपुर में ऑडिटर के पद पर भी अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

विज्ञापन कार्यालय-130/ 4 - बाबू पुरवा कॉलोनी, किदवई नगर, कानपुर

नवीन गुप्ता (विज्ञापन प्रतिनिधि)

बीपीएस न्यूज समाचार पत्र व ऑनलाइन न्यूज चैनल (पोर्टल) में विज्ञापन लगवाने के लिए संपर्क करें। मो. 9839625941

## आरटीओ टीम ने कानपुर-सागर हाईवे मार्ग पर वाहनों की सघन जांच करते हुवे 42 वाहनों का किया चालान

कानपुर। जिलाधिकारी जितेन्द्र प्रताप सिंह के निर्देश पर सड़क सुरक्षा और यातायात नियमों के प्रभावी अनुपालन हेतु आरटीओ प्रवर्तन टीम द्वारा विशेष अभियान चलाया गया। आरटीओ (प्रवर्तन) राहुल श्रीवास्तव के नेतृत्व में कानपुर नगर के समस्त एआरटीओ (प्रवर्तन) एवं यात्री कर अधिकारियों की संयुक्त टीम ने कानपुर-सागर हाईवे पर वाहनों की सघन जांच की। इस जांच अभियान के दौरान मानक के अनुरूप नंबर प्लेट न होने के कारण कुल 42 वाहनों के विरुद्ध चालान की कार्रवाई की गई। जिन वाहनों पर फैंसी नंबर प्लेट, छोटे आकार या अन्यत्र पठनीयता में बाधा उत्पन्न करने वाले नंबर पाए गए, उन्हें नियमों के तहत कार्रवाई की गई। आरटीओ प्रवर्तन अधिकारी राहुल श्रीवास्तव ने वाहन चालकों एवं स्वामियों से अनुरोध किया कि वे अपने वाहनों पर भारत सरकार द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार ही नंबर प्लेट लगवाएं। उन्होंने कहा कि गैर मानक नंबर प्लेट न केवल नियमों का उल्लंघन है, बल्कि दुर्घटनाओं और अपराध की स्थिति में पहचान में भी बाधा उत्पन्न कर सकती है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि भविष्य में ऐसे मामलों में और भी कठोर कार्रवाई की जाएगी।

बी पी एस न्यूज
हिन्दी साप्ताहिक

मुद्रक प्रकाशक स्वात्वाधिकारी बुद्ध प्रकाश साहू द्वारा मां प्रिन्टर्स गार्डेन नं. 6-ए/7 रेल बाजार कानपुर नगर से मुद्रित एवं 344- बगाही भट्ठा टी.पी. नगर कानपुर से प्रकाशित। आर.एन.आई. नं. UPHIN/ 2016/ 66740, डाक पंजीयन सं. कानपुर सिटी 304/2024-2026, सम्पादक बुद्ध प्रकाश साहू मो.: 8423454502 , व्हाट्सअप 9335908846 email:bps.knp786@gmail.com info@bpsnews.in www.bpsnews.in नोट-समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र कानपुर नगर न्यायालय होगा। समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त लेखों एवं समाचारों की जिम्मेदारी लेखकों व संवाददाताओं की होगी। कृपया कोई भी आपत्ति हो तो 15 दिनों के अंदर भेजें।